ऋग्वेद

ओ३म्

यजुर्वेद

पवमान

(मासिक)

मूल्य: ₹ 20

वर्ष : 31 आषाढ़-श्रावण वि0स0 2076 जुलाई 2019 अंक : 7

मुद्रक: सरस्वती प्रेस, देहरादून वजन: 50 ग्राम

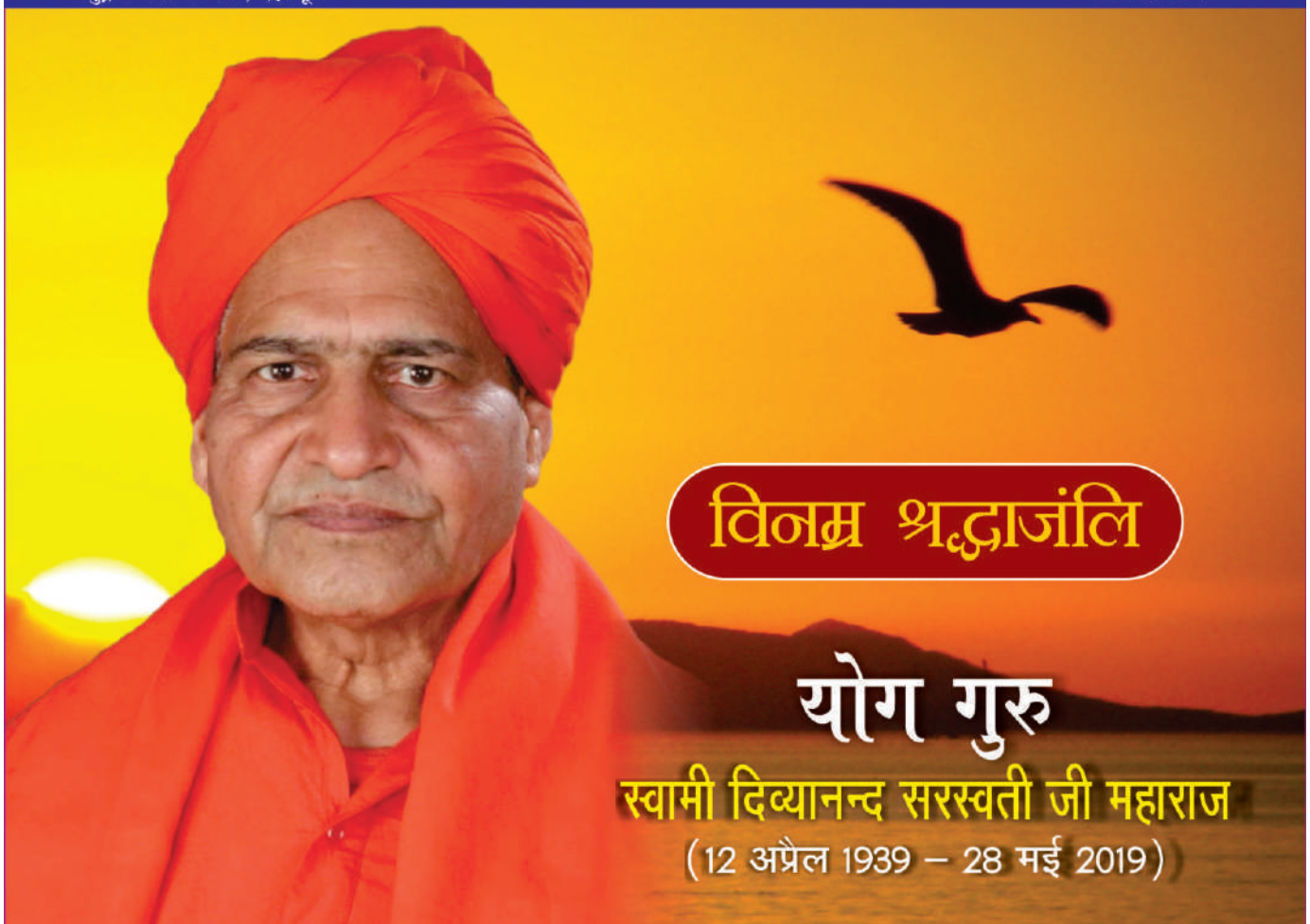

विनम्र श्रद्धाजंलि

योग गुरु

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी महाराज

(12 अप्रैल 1939 – 28 मई 2019)

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून-248008

सामवेद

अथर्ववेद

पवमान पत्रिका हमारी वेबसाइट www.vaidicsadhanashramdehradun.com पर भी उपलब्ध है।

With Best
Compliments From

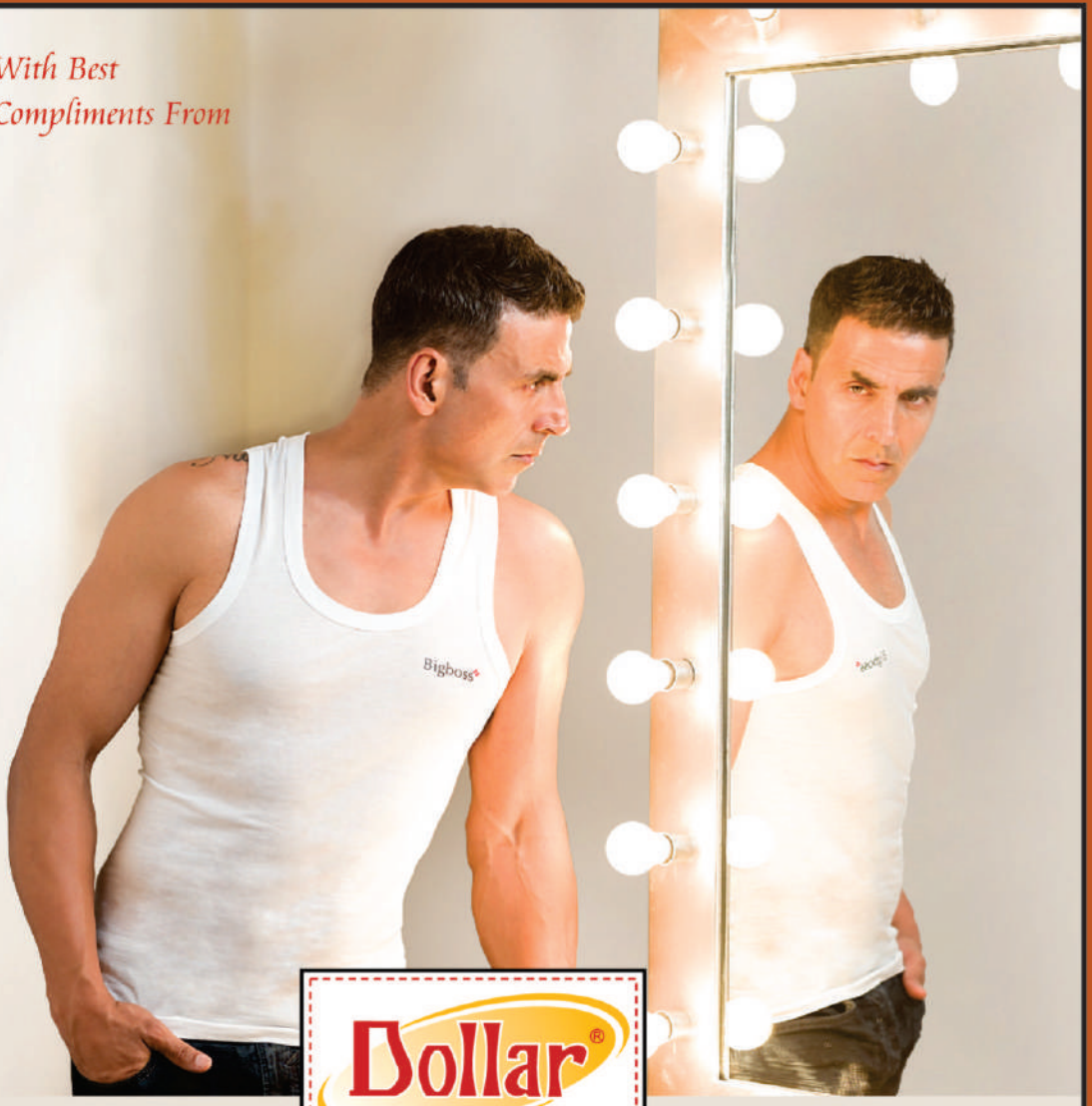

Dollar®

Bigboss
PREMIUM INNERWEAR

Fit Hai Boss

www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at all leading shopping portals
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

ओ३म्

पवमान

वर्ष–31 अंक–7

आषाढ़–श्रावण 2076 विक्रमी जुलाई 2019
सृष्टि संवत् 1,96,08,53,120 दयानन्दाब्द : 195

★

–: संरक्षक :–
स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती
मो. : 9410102568

★

–: अध्यक्ष :–
श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री
मो. : 09810033799

★

–: सचिव :–
प्रेम प्रकाश शर्मा
मो. : 9412051586

★

–: आद्य सम्पादक :–
स्व0 श्री देवदत्त बाली

★

–: मुख्य सम्पादक :–
डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री
अवैतनिक
मो. : 9336225967

★

–: सम्पादक मण्डल :–
अवैतनिक
आचार्य आशीष दर्शनाचार्य
मनमोहन कुमार आर्य

★

–: कार्यालय :–
वैदिक साधन आश्रम, तपोवन,
तपोवन मार्ग, देहरादून–248008
दूरभाष : 0135–2787001
मोबाईल : 7310641586

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com
Web-www.vaidicsadhanashramdehradun.com

विषयानुक्रम

सम्पादकीय	डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	2
वेदामृत	आचार्य डॉ० रामनाथ वेदालंकृत	3
कर्मफल कर सिद्धान्त	डॉ कृष्णकांत वैदिक	4
ईश्वर की सबसे बड़ी नियामत	मनमोहन कुमार आर्य	7
रास बिहारी बोस	स्वामी यतीश्वरानन्द जी महाराज	10
आर्यसमाज के अमर स्वामी सरस्वती	मनमोहन कुमार आर्य	12
हनुमान की चेतावनी और राजनीतिमत्ता	ईश्वरी प्रसाद प्रेम जी	19
स्वतन्त्रता सेनानी वीर जयानन्द भारतीय जी	पं० उम्मेद सिंह विशारद	21
यज्ञमय जीवन : श्री योगेश मुंजाल जी	मनमोहन कुमार आर्य	24
श्रद्धांजलि	मनमोहन कुमार आर्य	30
दानदाताओं की सूची		32

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के बैंक खातों का विवरण

दान हेतु बैंक खाते का नाम	बैंक का नाम व पता	बैंक अकाउन्ट नं.	IFSC Code
आश्रम को दान देने के लिये			
1. "वैदिक साधन आश्रम"	केनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101001530	CNRB0002162
पवमान पत्रिका शुल्क			
2. "पवमान"	केनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101021169	CNRB0002162
सत्संग भवन एवं आरोग्य धाम के निर्माण में सहयोग हेतु			
3. "वैदिक साधन आश्रम"	ओरियन्टल बैंक ऑफ कामर्स 17 राजपुर रोड, देहरादून	00022010029560	ORBC0100002
तपोवन विद्यानिकेतन स्कूल के लिये			
4. 'तपोवन विद्या निकेतन"	यूनियन बैंक, तपोवन रोड, नालापानी, देहरादून	602402010003171	UBIN0560243

पवमान पत्रिका में विज्ञापन के रेट्स

1.	कलर्ड फुल पेज	रु. 5000/– प्रति माह
2.	ब्लैक एण्ड व्हाईट फुल पेज	रु. 2000/– प्रति माह
3.	ब्लैक एण्ड व्हाईट हॉफ पेज	रु. 1000/– प्रति माह

पवमान पत्रिका के रेट्स

1.	मासिक मूल्य (1 पत्रिका)	रु. 20/– एक प्रति
2.	वार्षिक मूल्य (12 प्रतियाँ प्रति वर्ष)	रु. 200/– वार्षिक
3.	15 वर्ष (आजीवन) के लिए मूल्य	रु. 2000/–

पवमान में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र देहरादून ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

सम्पादकीय

उपनिषदों में आचार शिक्षा

उपनिषद् शब्द की निष्पत्ति उप तथा नि उपसर्गपूर्वक षद्लृ धातु से क्विप् प्रत्यय करने पर होती है। षद् धातु के तीन अर्थ होते हैं– नाश होना, गति (प्राप्ति) होना और शिथिल करना। आचार्य शंकर के अनुसार उपनिषद् प्रतिपाद्य और वेद ब्रह्म विद्या का प्रतिपादन करते हैं। इस प्रकार ब्रह्म का अवबोध कराने वाली होने के कारण उपनिषद् ब्रह्मविद्या है। उपनिषदों में केवल आध्यात्मिक कल्याण के लिए नैतिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन ही नहीं किया गया है, अपितु उनमें सामान्य और विशिष्ट कत्तव्यों की आचार संहिता भी प्रस्तुत की गई है। इनमें वे सारे कार्य नैतिक माने गए हैं, जिनसे मानव राग–द्वेष से मुक्त होता है। जहाँ न्याय और युक्ति की प्रधानता होती है, जहाँ मनुष्य अपने क्षुद्र स्वार्थों को दूर करता है, जहाँ उसे लोक–कल्याण की प्रेरणा मिलती है और जहाँ मनुष्य ब्रह्म की सत्ता द्वारा नियुक्त इस संसार के संचालन में अपने को सहभागी समझता है, वहाँ नैतिकता है। इसके विपरीत सभी आचरण अनैतिक हैं। उपनिषदों में जिन नैतिक गुणों पर बल दिया गया है, वे केवल त्यागात्मक व निषेधात्मक ही नहीं हैं, अपितु क्रियात्मक भी हैं। शिष्ट व्यक्तियों द्वारा अनुमोदित और बहुमान्य परम्पराओं को आचार कहते हैं। आचार आचरण अथवा व्यवहार का वह परिष्कृत नैतिक रूप है जो कुछ नियमों, रूढ़ियों, सिद्धान्तों आदि के आधार पर स्थित होता है। इनका अनुसरण या पालन लोक में आवश्यक समझा जाता है।

सर्वप्रथम वेदों में आचार की शिक्षा प्रदान की गई है। उसके बाद उपनिषदों में भी आचार की शिक्षा दी गई है। छान्दोग्य उपनिषद् में कहा गया है– आचारवान् पुरुषो वेद अर्थात् आचारवान् पुरुष ही सम्यक ज्ञान को प्राप्त कर सकता है। तैत्तिरीयोपनिषद् में कहा गया है– जो कोई भी वय, विद्या, तप, आचरण आदि में बड़े तथा ब्राह्मण आदि पूज्य पुरुष घर पर पधारें, उनको पाद्य, अर्ध्य आदि प्रदान करके सब प्रकार से उनका सम्मान तथा यथायोग्य सेवा करनी चाहिए। अपनी शक्ति के अनुसार दान करने के लिए सदा तत्पर रहना चाहिए। जो कुछ भी किसी को दिया जाए, वह श्रद्धापूर्वक दिया जाना चाहिए। अश्रद्धापूर्वक नहीं देना चाहिए। लज्जापूर्वक नहीं देना चाहिए। जो कुछ भी दिया जाए वह विवेकपूर्ण और उसके परिणाम को समझकर निष्कामभाव से कर्त्तव्य समझकर देना चाहिए। सदाचार के ये मूल मंत्र हैं। इनको जीवन में उतारना सिद्धि है।

कठोपनिषद् में कहा गया है– जो दुश्चरित्र है, जिनका मन अशान्त और विक्षिप्त है, वे प्रज्ञान द्वारा भी परमतत्त्व को नहीं जान सकते हैं। ऐसे लोगों को बार–बार संसार में आना पड़ता है। इस उपनिषद् में यह भी कहा गया है कि सदाचरण से अन्तःकरण शुद्ध होता है और सभी प्रकार के पापों का नाश हो जाता है। शाडिल्य उपनिषद् में यम की संख्या दस बतायी गई है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, दया, सरलता, क्षमा, धृति, मिताहार और शुचिता, ये दस यम हैं। निष्कर्षतः हम कह सकते हें कि उपनिषदों में समता, सह–अस्तित्व और आत्मतुला का पग–पग पर वर्णन मिलता है। इनमें आचार की शुद्धता के लिए इन्द्रिय निग्रह को अनिवार्य तत्त्व माना गया है। इसीलिए उपनिषदों का दर्शन और आचार ही सम्यग्दर्शन व सम्यक् आचार है। इस दृष्टि को प्राप्त कर लेना ही मानव जीवन का प्रधान उद्देश्य है।

डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

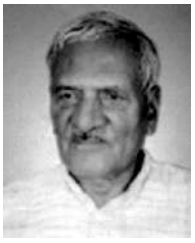

वेदामृत

इन्द्र और वरुण का आदर्श

तयोरिदवसा वयं, सनेम नि च धीमहि।
स्यादुत प्ररेचनम्।

ऋग्वेद 1.17.6

ऋषिः मेधातिथिः काण्वः। देवते इन्द्रावरुणौ। छन्दः निचृद् गायत्री।

(तयोः) उन (इन्द्र और वरुण) के (अवसा) रक्षण से (इत्) ही (वयं) हम (सनेम) धन कमायें (निधीमहि च) और निधि में संग्रह करें। (उत) और (प्ररेचनम्) रिक्तीकरण (भी) (स्यात्) होता रहे।

हम चाहते हैं कि हम इन्द्र और वरुण के संरक्षण में रहें। उनके संरक्षण में रहने का अभिप्राय यह है कि जिन आदर्शों का वे प्रतिनिधित्व करते हैं, उन्हें हम अपने जीवन में घटायें। इन्द्र ऐश्वर्यशालिता का प्रतिनिधि है। **इन्द्र के समान हम भी ऐश्वर्यशाली हों। हम सन्मार्ग पर चलते हुए धन कमाने में जुट जायें। निर्धनता एक अभिशाप है, इस अभिशाप से मुक्ति पाना प्रत्येक मानव का कर्तव्य है। हम निर्धन होते हैं अपने अपौरुष के कारण। पर जैसे–तैसे स्वयं को सन्तोष देते रहते हैं कि अच्छा है हम निर्धन हैं, क्योंकि धन मनुष्य को परमात्मा से दूर कर देता है। सच्ची बात यह है कि धनी होकर मनुष्य को परमात्मा के समीप पहुंचने के अधिक अवसर रहते हैं।** यदि उन अवसरों का वह उपयोग नहीं करता तो यह धन का दोष नहीं, अपितु उसका अपना दोष है। अतः हमें चाहिये कि हम इन्द्र के आदर्श का अनुसरण करते हुए उचित साधनों से धन का संचय करें, प्रभूत संचय करें, इतना संचय करें कि हम धन की अपार निधि के स्वामी हो जाएं।

परन्तु यदि हम वेद का इतना ही आदेश समझें, तो वह अधूरा है। इन्द्र के साथ–साथ हमें वरुण के स्वरूप का भी चिन्तन करना है। वरुण पाशी है, वह अनृतभाषी एवं अनृत आचरणवाले को अपने पाशों से बांधकर दण्डित करता है। अतः ऐसा न हो कि धन पाकर हम कुमार्ग पर चल पड़ें और हमें वरुण–द्वारा दण्डित होना पड़े। वरुण दीन–दुःखियों को वरने वाला भी है। उन्हें वरकर वह उनकी सहायता करता है। **हम भी अपने संचित ऐश्वर्य का केवल स्वयं उपभोग न करें, अपितु सत्पात्रों को उसका दान भी करें, यही वैदिक मर्यादा है।** जैसे तालाब का पानी, यदि उसमें से निकासी न हो तो, मलिन हो जाता है, वैसे ही धन की निधि में से भी निकासी न होने पर वह मलिन और गर्हणीय हो जाती है। अतएव वैदिक स्तोता कह रहा है कि हम निधि भर–भरकर कमायें तो अवश्य, पर अपनी निधि को खाली भी करते रहें। हम निधि के द्वारों को, जिन्हें धन की आवश्यकता है और जो विकलांग आदि होने के कारण स्वयं धनार्जन में समर्थ नहीं हैं, उनके लिए खोल दें। लोकहितकारी कार्यों के लिए भी, निधि में से दान करते रहें, क्योंकि लोकहित के कार्य किसी एक से नहीं, किन्तु सभी के सहयोग से चलते हैं।

(आचार्य डॉ० रामनाथ वेदालंकृत वेद–मंजरी से साभार)

कर्मफल कर सिद्धान्त

—डॉ कृष्णकांत वैदिक

ईश्वरीय कर्मफल व्यवस्था उसके सार्वभौम नियमों के द्वारा संचालित होती है। यह व्यवस्था समस्त जीवों के लिए हर काल और हर देश में समान रहती है। इस व्यवस्था में कभी भी कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। यह व्यवस्था जैसे पूर्व कल्पों में थी, वैसे ही वर्तमान कल्प में भी है और आगे आने वाले कल्पों में भी रहेगी। ईश्वर की व्याख्या करते हुए महर्षि आर्योद्देश्यरत्नमाला में लिखते हैं ''जिसके गुण, कर्म, स्वभाव और स्वरूप सत्य ही हैं, जो केवल चेतनमात्र वस्तु है तथा जो एक अद्वितीय सर्वशक्तिमान्, निराकार, सर्वत्र, अनादि, अनन्त आदि सत्य गुणवाला है और जिसका स्वभाव अविनाशी, ज्ञानी, आनन्दी, शुद्ध, न्यायकारी, दयालु और अजन्मादि है। जिसका कर्म जगत् की उत्पत्ति, पालन, और विनाश करना, सब जीवों को पाप पुण्य के फल ठीक–ठीक पहुंचाना है, उसको ईश्वर कहते हैं।'' ईश्वर की इस व्याख्या में महर्षि ने यह बताया है कि ईश्वर का यह कर्म है कि वह जीवों को पाप–पुण्य के फल ठीक–ठीक पहुंचाए। कर्मफल का सिद्धान्त दो मूल दार्शनिक सिद्धान्तों पर आधारित है। प्रथम सिद्धान्त यह है कि जीव कर्म करने में स्वतंत्र है और उसके आधार पर उसे फल मिलते हें। दूसरा सिद्धान्त यह है कि फल का दाता परमेश्वर है, जो अपनी व्यवस्था के अनुसार जीव द्वारा किए गए कर्मों के अनुपात में फल देता है। संसार में इन मूल सिद्धान्तों से कोई इनकार नहीं करता है और सभी यह मानते हें कि जो जैसे कर्म करता है, उसे वैसा फल मिलता है। इन सिद्धान्तों को मानते समय कुछ मूल–भूत तथ्यों को ध्यान में रखना आवश्यक है। इसमें ईश्वर को मानना अनिवार्य है क्योंकि वही कर्मों का फल देता है। जीव का पुनर्जन्म होता है। कर्मों का फल कुछ इस जीवन में और शेष अगले जन्म में मिलता है, इसलिए कर्मफल सिद्धान्तों को मानने के लिए पुनर्जन्म को मानना भी आवश्यक है।

ईश्वर का दयालु और न्यायकारी होना–

ईश्वर तभी कर्मों के अनुपात में फल दे सकता है, जब कि वह न्यायकारी हो। साथ ही वह परम दयालु भी है। शुभ कर्मों का फल देने में जीव का कल्याण है और अशुभ कर्मों का दण्ड देने में भी जीव का ही कल्याण है। इसलिए कर्मफल का सिद्धान्त परमेश्वर को दयालु और न्यायकारी प्रमाणित करता है। यहाँ पर दया का अर्थ है– जीव का हितचिन्तन की ऐसी व्यवस्था करना जिसमें कोई न्यूनता या अधिकता न हो। हम विचार करें कि ईश्वर दयालु होकर भी दुःख क्यों देता है? वह ईश्वर अपने प्रिय जीव को अशुभ कर्मों से छुड़ाना चाहता है। जब दुःख असह्य हो जाते हैं तो जीव को मूर्छा आ जाती है। मूर्छा में असह्य से असह्य दुःख सह्य हो जाते हैं। दुःख और सुख दोनों आत्म–विकास पर प्रभाव डालते हैं, इसलिए ये दोनों हितकर हैं।

ईश्वरीय व्यवस्था–

ईश्वर की व्यवस्था जड़ और चेतन के लिए समान नहीं है। चेतन को अपने कर्मों को करने में पूर्ण स्वतंत्रता है और उसका जड़ चीजों पर पूरा अधिपत्य रहता है। सृष्टि के प्रयोजन ही दो हैं। जीव का भोग और जीव का कर्म। इन दोनों प्रयोजनों के लिए सृष्टि सर्वथा उपयुक्त

है। कर्म के अनुकूल ही भोग होता है। बच्चा उत्पन्न होते ही भोग पाता है। इससे उसकी बुद्धि का विकास होता है। जीव हर कर्म से भोग उत्पन्न करता है। यह चक्र कभी बन्द नहीं होता है। यह अवश्य सिद्ध है कि जीव कर्म करने में स्वतंत्र और भोग में परतंत्र है। यह भी उल्लेखनीय है कि श्रेष्ठ पुरुषों को लोक में निकृष्ट लोगों की तुलना में अधिक स्वतंत्रता रहती है।

जीव की उत्पत्ति का कारण–

हम यह विचार करते हैं कि परमेश्वर ने ऐसा जीव क्यों बनाया जो कर्म करने में स्वतंत्र है। यदि जीव स्वतंत्र नहीं होता तो वह पुण्य नहीं कर सकता था और उसे सुख भी नहीं मिलता। ईश्वर ने जीव को नहीं बनाया है, अपितु वह एक अनादि सत्ता है। यदि ईश्वर ने जीव बनाया होता तो वह दोषी ठहरता क्योंकि यह समस्त सृष्टि उसके बनाये हुए जीवों के लिए होती। ऐसे में प्रश्न होता कि जीव को बनाया ही क्यों? अपने लिए या अन्य के लिए। अन्य कोई था नहीं अतः अपने लिए बनाना तो उसका स्वार्थी होना सिद्ध होता। यदि हम ऐसा मान लेते हैं तो फिर उस ईश्वर ने दुःखमयी सृष्टि क्यों बनाई?

सृष्टि की उत्पत्ति का कारण–

यह जानने के लिए हमें वर्तमान सृष्टि के मूलाधार में जो तत्त्व हैं, उनकी खोज करनी होगी। ईश्वर ने सृष्टि की रचना जीव के लिए की है। यदि जीव अल्पज्ञ न होता तो सृष्टि की आवश्यकता न होती। यदि जीव अनादि न होता तो जीव के निर्माण की आवश्यकता होती न कि सृष्टि की। ईश्वर सर्वज्ञ है, इसीलिए उसने सृष्टि को जीवों की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाया है। बहुत से लोग ईश्वर से इतर किसी सत्ता को अनादि और अमर नहीं मानते हैं। ऐसा मानना वे ईश्वर का अपमान करना समझते हैं। उनके द्वारा ईश्वर और सृष्टि का स्वरूप अपने मन से काल्पनिक रूप से रचा जाता है। जीव के अजन्मा, अजर और अमर न होने पर अध्यात्म का कोई अर्थ नहीं रह जाता है। ईसाई, मुसलमान आदि धर्मों में यूनानी दर्शनकारों के अनुकरण से जीव को अनित्य और उत्पत्ति वाला मान लिया गया। इसके दुष्परिणाम यह हुए कि जीव की स्वतंत्रता नष्ट हो गई और जीव ईश्वर के हाथ का खिलौना बन गया। इससे सृष्टि उत्पत्ति का कोई युक्तियुक्त कारण शेष नहीं रहा। ईश्वर जो चाहे कर सकता है, ऐसा मान लेने पर कर्मों के शुभाशुभ का प्रश्न भी विचारणीय नहीं रहता है। जीव को अनादि और कर्म करने में स्वतंत्र माने बिना कर्म–फलवाद की पुष्टि नहीं हो सकती है।

जीव कर्म करने में स्वतंत्र और फल पाने में परतंत्र है–

किसी भी कार्य को करने के लिए जीव को पूर्ण अधिकार है कि उसे करे या न करे। काम के पूर्ण हो जाने के पहले सब कुछ कर्ता के हाथ होता है, परन्तु उसके बाद सारा अधिकार जगत् के व्यवस्थापक परमेश्वर के हाथ में चला जाता है और जीव सर्वथा परतंत्र हो जाता है। उसके पश्चात् कर्मफल की चिन्ता करना व्यर्थ है। कर्त्तव्य का न करना अशुभ है और उलटा करना भी अशुभ है। जगत् के बनाने वाले ने मनुष्य को परिस्थितियों में इतना जकड़ दिया है कि उनके विरुद्ध मनुष्य कुछ नहीं कर सकता है। अतः मनुष्य को 'स्वतंत्र' कहना क्या मिथ्या है? इस बिन्दु पर विचार करें तो हम पाते हैं कि जब कभी हमारे मन में काम करने की भावना उठती है कि मैं ऐसा काम करूँ या न करूँ, तब हम बुद्धि से तोल कर निश्चय करते हैं कि अमुक

काम करना है या नहीं करना है। हम ऐसा करते हैं तो इससे सिद्ध होता है कि हम कर्म करने में स्वतंत्र हैं।

जीव शुभ कर्म या अशुभ कर्म क्यों करता है?–

कर्म करना जीव का स्वाभाविक गुण है। वह बिना कुछ किए नहीं रह सकता है। कर्म करने के लिए ज्ञान चाहिए। जीव स्वभाव से अल्पज्ञ है। उसको पदार्थों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए ज्ञान प्राप्ति की आवश्यकता है। यथार्थ ज्ञान न होने से वह भूल कर बैठता है। जैसे छोटा बच्चा दीपक की लौ हाथ से पकड़ कर हाथ जला बैठता है।

जीव का हित और कर्मफल–

जीव का हित है कि वह अपने स्वरूप को पहचाने। जीव संसार में आकर अपने वास्तविक स्वरूप को भूल जाता है और अपने को जड़ या जड़ पदार्थों के आश्रित समझ लेता है। उसकी इस अज्ञानता के कारण वह जो कर्म करता है, वे अशुभ होते हैं। उसके जितने अधिक ऐसे कर्म होते हैं, उतना ही जीव उनमें फंसकर अपने स्वरूप को अधिक भूल जाता है। इसके विपरीत उसके जितने कर्म ऐसे हैं, जिनसे उसको अपने स्वरूप का परिज्ञान हो, वे शुभ हैं। यह भी उल्लेखनीय है कि हमारी भूलें हम को सचेत करती हैं। एक बार लौ से जलने के बाद बच्चा उसे फिर नहीं पकड़ता है, क्योंकि उसके अज्ञान में अब कमी हो गई है। कर्मों के सम्बन्ध में भी मनुष्य का यही हाल होता है।

कर्मफल का रूप–

अब हम यह विचार करते हैं कि परमेश्वर हमें कर्मफल किस रूप में देता है। कर्मों का फल तो अन्ततोगत्वा सुख या दुःख के रूप में ही होता है। सुख या दुःख देने के अनेक निमित्त होते हैं। ये स्वयं में सुख या दुःख नहीं होते अपितु उनके साधन अवश्य होते हैं। यह जानना कठिन है कि अमुक निमित्त कब दुःख का साधक है और कब सुख का। यह अत्यन्त जटिल व्यवस्था है। इसे पूर्ण रूप से ईश्वर ही जानता है। परमेश्वर जीव को केवल उसके ही कर्मों का फल देता है, अन्य के कर्मों का नहीं।

कर्मफल की व्यवस्था–

हम यह विचार करते हैं कि परमेश्वर की कर्मफल के सम्बन्ध में कोई नियत व्यवस्था है या वह जब जैसा चाहे, वैसा करता है। परमेश्वर की सभी व्यवस्थायें नियत और अपरिवर्तनशील होती हैं। उनमें कोई भी परिवर्तन नहीं होता है। समस्त जीवों को उसी व्यवस्था के अनुसार फल मिलता है। अब प्रश्न यह उठता है कि यदि व्यवस्था रूपी तंत्र पूरी तरह नियत है तो परमेश्वर को मानने की क्या आवश्यकता है? इसका उत्तर यह है कि सृष्टिक्रम हमें व्यवस्था की सूचना देता है, परन्तु हम परमेश्वर को देख नहीं सकते हैं। क्योंकि हम को प्रयोजन व्यवस्था से है, व्यवस्थापक से नहीं। यदि ईश्वर को न भी मानें तो भी व्यवस्था वैसी ही रहेगी। उसमें परिवर्तन न होगा। यह ठीक है कि व्यवस्था निश्चित और अपरिवर्तनशील है। मनुष्य के लिए यह उचित नहीं है कि वह व्यवस्था को तो स्वीकार करे परन्तु व्यवस्थापक को छोड़ दे। ऐसे में वह अज्ञान का दोषी कहलायेगा। यदि मनुष्य व्यवस्थापक–शून्य जड़ व्यवस्था को मानते हैं तो वह अपने चेतन स्वरूप को भूल कर जड़–बुद्धि हो जाते हैं। व्यवस्था को निश्चित करना भी ज्ञान का ही फल है क्योंकि कर्म करने वाले के कर्म के शुभ या अशुभ होने की जाँच के बाद ही फल की व्यवस्था होती है।

मानव जीवन हमें ईश्वर की सबसे बड़ी नियामत

—मनमोहन कुमार आर्य

हमें मनुष्य का जीवन मिला है। इस जीवन में हमारे माता–पिता का योगदान निर्विवाद है, परन्तु इसके साथ ही हमारी आत्मा और शरीर का सम्बन्ध कराने वाला सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वव्यापक एवं सर्वशक्तिमान परमात्मा है। यदि परमात्मा न होता तो न तो यह सृष्टि अस्तित्व में आती और न ही इस सृष्टि में प्राणी जगत का अस्तित्व होता। परमात्मा इस सृष्टि का निमित्त कारण है और उसने ही अपनी सर्वज्ञता और सर्वशक्तिमत्ता से जीवात्माओं को उनके पूर्वजन्मों के शुभ व अशुभ कर्मों का सुख व दुःखरुपी फल देने के लिये ही इस संसार की रचना की है और वही इसका पालन व संचालन कर रहे हैं। सृष्टि का उपादान कारण जड़ प्रकृति है प्रलयावस्था में अत्यन्त सूक्ष्म व सत्व, रज एवं तमों गुणों वाली होती है। हम सभी मनुष्यों को ईश्वर को जानना है और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हुए जीवन व्यतीत करना है जिससे हम अपने जीवन में दुःखों से बचे रहे और मृत्यु के बाद हमे मोक्ष प्राप्त हो सके। यदि हम मोक्ष की अर्हता पूरी न कर सकें तब भी हमें श्रेष्ठ मनुष्यों की देव योनि में जन्म मिले जहां रहते हुए हम पुनः मोक्ष की प्राप्ति के लिये प्रयत्न करें और उसे प्राप्त कर लें। जन्म व मृत्यु की पहेली को समझने के लिये सभी मनुष्यों को ऋषि दयानन्द कृत **'सत्यार्थप्रकाश'** आदि समस्त साहित्य को पढ़ना चाहिये। सत्यार्थप्रकाश में अनेक विषयों पर जो विस्तृत ज्ञान है वह अन्यत्र उपलब्ध नहीं है और यदि कुछ है भी, तो उसके इसके लिये अनेक संस्कृत के वैदिक ग्रन्थों को पढ़ना होगा। सत्यार्थप्रकाश का महत्व यह है कि प्रायः सभी इष्ट विषयों का ज्ञान इस ग्रन्थ को पढ़कर

4–5 दिनों में ही हमें प्राप्त हो जाता है जिसमें सृष्टि व ईश्वर–जीवात्मा विषयक प्रायः सभी रहस्य सम्मिलित हैं। इसी कारण वेद मनीषी पं० गुरुदत्त विद्यार्थी जी ने कहा था कि उन्होंने अपने जीवन में लगभग 18 बार सत्यार्थप्रकाश पढ़ा। उन्होंने यह भी कहा है कि यदि सत्यार्थप्रकाश पढ़ने के लिये उन्हें अपनी समस्त भौतिक सम्पत्ति बेचनी पड़ती तब भी वह सहर्ष इस पुस्तक को प्राप्त करते। सत्यार्थप्रकाश का महत्व अनन्त है। इसकी महत्ता एवं उपयोगिता को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता।

संसार में तीन अनादि, अमर तथा नित्य सत्तायें ईश्वर, जीव और प्रकृति हैं। हम जीव हैं और हमारी ही तरह अनन्त जीवात्मायें इस ब्रह्माण्ड में हैं। हम जीवात्मा है और हमारा शरीर पंचभौतिक पदार्थों के संयोग से बना है। यह संयोग ईश्वर के बनाये नियमों व व्यवस्था के द्वारा होता है। जिसकी उत्पत्ति होती है उसका विनाश भी होता है और जिसकी उत्पत्ति नहीं हुई उसका विनाश कभी नहीं होता। इसी कारण हमारा शरीर नाशवान

अर्थात् मरणधर्मा है जबकि हमारी आत्मा अनादि, नित्य, अविनाशी और अमर है। हमारे इस शरीर के जन्म से पूर्व भी आत्मा का अस्तित्व था। हमारे इस शरीर के मृत्यु को प्राप्त होने पर भी हमारी आत्मा का अस्तित्व रहेगा। ईश्वर अजन्मा है और इसके विपरीत जीवात्मा जन्म–मरण धर्मा है। इस जन्म से पूर्व भी हम अर्थात् जीवात्मा अपने उससे पूर्वजन्म व जन्मों के अभुक्त कर्मों के अनुसार किसी प्राणी योनी में इस ब्रह्माण्ड में कहीं इस पृथिवी के अनुरूप ग्रह पर जीवन व्यतीत कर रहे थे और ऐसा ही हमारे इस वर्तमान जीवन की मृत्यु के बाद भी होगा। परमात्मा की हम पर कृपा होने से वह हमारे इस जन्म व पूर्वजन्मों के अभुक्त कर्मों के अनुसार जन्म देता है और कर्मों के अनुसार ही हमारी जाति (मनुष्य, पशु वा पक्षी आदि), आयु और भोग (सुख व दुःख) निश्चित होते हैं। यदि परमात्मा व प्रकृति में से, दोनों अथवा कोई एक या दोनों ही, न होते तो हमारा जन्म व मरण नहीं हो सकता था और न ही हम किसी प्रकार के सुख व दुःखों का भोग कर सकते थे। हममें से कोई प्राणी दुःख नहीं चाहता, सभी प्राणी सुख, शान्ति व सुरक्षा चाहते हैं। सुखों का आधार शुभ व श्रेष्ठ कर्म हैं। अतः हमें अशुभ व पाप कर्मों को करना छोड़ना होगा। यदि हम पाप कर्मों को करना पूर्णतः छोड़ देंगे तो हमें दुःख प्राप्त नहीं होंगे और हम सुखपूर्वक इस जीवन को व्यतीत कर अगले जन्म में भी सुखी व श्रेष्ठ मानव जीवन प्राप्त कर देवकोटि की मनुष्य योनि में जन्म लेकर सुखी जीवन व्यतीत कर सकते हैं। परमात्मा ने हमारे मार्गदर्शन व कर्तव्यों की प्रेरणा करने के लिये ही सृष्टि के आरम्भ में वेदों का ज्ञान दिया था। हमारे ऋषियों व विद्वानों ने वेद व इसके सत्य अर्थों की रक्षा की और यह लगभग 1.96 अरब वर्षों की यात्रा करते हुए हम तक पहुंचे हैं। इस कार्य में महर्षि दयानन्द जी का बहुत बड़ा योगदान है। हम सब उनके ऋणी हैं। उन्हीं के कारण हम अपने इस जीवन में वेद, सत्यासत्य कर्मों सहित धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष तथा इसकी प्राप्ति के उपाय ईश्वरोपासना, अग्निहोत्र व सदाचरण आदि को जान सके हैं। हमें सुख व प्रसन्नता आदि जो भी अनुभूतियां प्राप्त होती हैं वह सब ईश्वर हमें हमारे कर्मों के अनुरूप प्रदान करते हैं। हमें सदैव स्वयं को ईश्वर का ऋणी व कृतज्ञ अनुभव करना है और वेदाध्ययन सहित ऋषि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों सहित अन्य विपुल वैदिक साहित्य का अध्ययन करते रहकर सन्मार्ग का अनुगमन करना है।

यदि हम अपने कर्मों को देखें तो हम पाते हैं कि अपने एक–एक कर्म का ज्ञान रखना कितना कठिन है। हम स्वयं ही अपने अतीत के अनेक कर्मों को भूल जाते हैं। ईश्वर हमारे इस जन्म व पूर्वजन्मों के किसी कर्म को नहीं भूलता। ईश्वर का यह गुण हमें उसके प्रति समर्पित होकर उपासना करने के लिये प्रेरित करता है। कल ही हमने फेसबुक पर एक मन्त्र व उसके मन्त्रार्थ को पढ़ा जिसमें कहा गया है कि हम दिन में कितनी बार पलक झपकते और कितनी बार आंखे खोलते हैं, इसका पूरा–पूरा हिसाब परमात्मा को पता होता है। हमारे छोटे, बड़े सभी कर्मों, चाहें वह दिन के प्रकाश में किये गये हों या रात्रि के अन्धेरे में अथवा सबसे छुप कर किये गये हों, परमात्मा उन सभी कर्मों को यथावत् जानता है और समयानुसार उनका फल कर्ता को देता है। ईश्वर का यह गुण हमारे भीतर रोमांच उत्पन्न करता है। इसी कारण हमारे सभी विद्वान, योगी व ऋषि न तो स्वयं कभी कोई अशुभ व पाप कर्म करते थे और न

ही किसी अन्य को करने की प्रेरणा करते थे। हमें अपने जीवन को सार्थक बनाने व इसके लिए मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिये ऋषि दयानन्द के सभी विद्वानों द्वारा लिखे गये जीवन चरितों सहित स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, पं0 लेखराम आर्यमुसाफिर, पं0 गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज, स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती, स्वामी विद्यानन्द सरस्वती आदि महापुरुषों की जीवनियों व आत्मकथाओं को पढ़ना चाहिये। इससे हमें सद्कर्मों को करने की प्रेरणा मिलने के साथ असत्य के त्याग करने का बल भी प्राप्त होगा।

हम ईश्वर की कृपा को इस रूप में भी अनुभव करते है कि जब सन् 1825 के दिनों में सारा देश अज्ञान व आध्यात्मिक ज्ञान से भ्रमित व अन्धविश्वासों व कुपरम्पराओं से ग्रस्त था, तब उस परमात्मा ने कृपा करके तत्कालीन व भावी सन्ततियों के लिये वेदज्ञान से परिपूर्ण ऋषि दयानन्द को इस देश में भेजा था जिन्होंने स्थान–स्थान पर जाकर वेदों का प्रचार कर अज्ञान व अन्धविश्वासों को दूर किया था। ऋषि दयानन्द ने जड़–मूर्ति पूजा की निरर्थकता से हमारा परिचय कराया था और फलित ज्योतिष की निर्मूलता व निरर्थकता से भी हमें सावधान रहने के लिये कहा था। अवतारवाद को उन्होंने अवैदिक व असत्य कल्पना करार दिया था और मृतक श्राद्ध को उन्होंने तर्क व युक्ति के विरुद्ध घोषित किया था। उन्होंने स्त्री व शूद्रों सहित मनुष्यमात्र को वेदाध्ययन का अधिकार दिया और आर्यसमाज गठित करके आर्यसमाज के 10 स्वर्णिम नियम हमें दिये थे। ऋषि दयानन्द ने हमें सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि आदि एक दर्जन से अधिक ग्रन्थ दिये जिन्हें पढ़कर हम अपने जीवन को ऊंचा उठा सकने सहित धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति कर सकते हैं। उनकी कृपा से ही आज हम व लाखों लोग असत्य मत व मार्ग को त्याग कर सत्य व कल्याण–पथ को ग्रहण कर सके हैं। इस जीवन में हमें वेद सहित ऋषि दयानन्द और प्राचीन ऋषियों के दर्शन, उपनिषद, मनुस्मृति, रामायण, महाभारत सहित वैदिक विद्वानों के शताधिक महत्वपूर्ण ग्रन्थों के अध्ययन का सुअवसर व सौभाग्य प्राप्त हुआ है। हम अनुभव करते हैं कि यदि ऋषि दयानन्द जी न आये होते तो हम निश्चयपूर्वक नहीं कह सकते कि हम वैदिक सनातन धर्म में बने रहते भी या नहीं? देश में धर्मान्तरण की जो आंधी ईसाई व मुसलमानों द्वारा चलाई गई थी उसे वेद प्रमाण, तर्क एवं युक्तियों से ऋषि दयानन्द और उनके बाद उनके अनुयायियों ने ही रोका व धराशायी किया था। हमें यह सब कार्य ईश्वर के द्वारा प्रेरित प्रतीत होते हैं। यदि ईश्वर हमारे महापुरुषों को प्रेरणा व शक्ति न देते तो आज देश और विश्व का स्वरूप वह न होता जो आज है। इस कार्य के लिये ईश्वर एवं ऋषि दयानन्द का कोटिशः वन्दन करते हैं।

परमात्मा ने हमें मनुष्य जन्म देने सहित भारत भूमि और वह भी एक वैदिक धर्मी वा सनातन धर्मी परिवार में जन्म देकर हम पर जो उपकार किया है, हम उसका भी सही मूल्यांकन नहीं कर सकते। भारत में जन्म लेकर हम ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज से जुड़े हैं, यह भी ईश्वर की हम पर महती कृपा है। हम सब आर्य भाई–बहिन इसके लिए ईश्वर के अतीव आभारी हैं। हम वैदिक साहित्य और वेद एवं ऋषियों की प्रेरणा के अनुरूप आचरणों से सदैव जुड़े रहें और ईश्वर की वेदाज्ञा का लोगों में प्रचार करते रहें, इसके लिये ईश्वर हमें सामर्थ्य एवं शक्ति प्रदान करें।

रास बिहारी बोस

—स्वामी यतीश्वरानन्द जी महाराज

जनवरी 1945 को जापान की राजधानी टोक्यो में सम्राट ने एक भारतीय क्रान्तिकारी के पार्थिव शरीर को टोक्यो लाने के लिये शाही कोच (ट्रेन का डिब्बा) भेजा और जापानी सरकार ने इस महान क्रान्तिकारी को ''मैरिट ऑफ द राइजिंग सन–दूसरा दर्जा'' नामक सम्मान दिया जो जापान में किसी विदेशी को मिलने वाला सर्वश्रेष्ठ सम्मान है।

ये अप्रतिम क्रान्तिकारी रासबिहारी बोस थे। रासबिहारी का जन्म 25 मई 1986 को बंगाल के बुर्दवान (वर्धमान) जिले के सुबाल्दाह गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम विनोद बिहारी बोस था। जो फ्रांसीसी आधिपत्य वाले शहर चंदरनगर में काम करते थे। जब रासबिहारी तीन वर्ष के थे तो इनकी माता का देहान्त हो गया। तब इन्हें इनकी मामी ने पाला तथा दादा कालीचरण ने पढ़ाया। दादा ने इनका दाखिला चंदरनगर के डूप्ले कॉलेज में कराया। रासबिहारी का पढने में मन नहीं लगता था पर कसरत करने और घूमने में खूब लगता था। इनके एक अध्यापक चारु चंद्र ने इन्हें राष्ट्रवाद की ओर प्रेरित किया। रासबिहारी ने आनन्द मठ पढा तथा पुराने बंगाल के सन्यासी विद्रोह के बारे में जाना। फिर इन्होंने नवीन सेन की प्रसिद्ध बांग्ला पुस्तक प्लासीर युद्ध (प्लासी का युद्ध) पढी। फिर इनका मन पढाई में रमने लगा। यहाँ तक कि इन्होंने बाद में फ्रांस से चिकित्सा की डिग्री ली और जर्मनी से इंजीनियर की। अपने चाचा के प्रभाव से इन्हें कलकत्ता मे प्रसिद्ध फोर्ट विलियम में नौकरी मिल गई। फिर तबादला होने पर ये शिमला में सरकारी प्रैस में आ गये और कॉपी होल्डर का काम करने लगे। तब तक ये क्रान्तिकारी गतिविधियों में हिस्सा लेने लगे थे। शिमला से इन्होंने नौकरी छोड़ दी तथा देहरादून के फोरेस्ट रिसर्च इन्स्टीटयूट में हेड क्लर्क के पद पर काम करने लगे। यहाँ के जुगान्तर समिति के क्रान्तिकारियों के साथ मिलकर काम करने लगे। अमरेन्द्र चटर्जी के सहयोग से बंगाल तथा जतीन्द्र बनर्जी (बाद के निर्लम्ब स्वामी) के सहयोग से पंजाब व उत्तर प्रदेश के आर्य समाजी क्रान्तिकारियों से इनका परिचय हुआ।

23 दिसम्बर 1912 को वायसराय लॉर्ड हार्डिंग के दिल्ली आगमन वाले काफिले पर बम फेंकने की घटना इन्हीं के द्वारा रची गई थी। चंदरनगर में इनके एक मित्र श्रीश घोष ने इन्हें यह सलाह दी थी। उसी वर्ष दीपावली के अवसर पर इन्होंने बसंत कुमार विश्वास के साथ बम फेंकने का अभ्यास किया। फिर एक वर्ष तक देहरादून के उद्यानों में हाथी जितनी ऊँचाई तक बम फेंकने का अभ्यास चलता रहा। यहाँ राजा प्रमथनाथ टैगोर के उद्यान में रासबिहारी तथा 16 वर्षीय बसन्त विश्वास अभ्यास करते। वायसराय पर हुए हमले में महावत मारा गया जबकि वायसराय को भी चोटें आई। रासबिहारी को ढूंढने के लिये सारे देश में पुलिस लगी थी पर ये रात की ट्रेन से देहरादून आ गये और अगले दिन पहले की ही तरह अपने कार्यालय पहुँच गये। यहाँ तक कि इन्होंने वायसराय पर हमले के विरोध में एक सभा का भी आयोजन किया।

फिर 1913 में विष्णु गणेश तथा करतार सिंह सराभा, बाघा जतिन के निर्देश पर अमेरिका से आकर रासबिहारी से बनारस में मिले तथा इन्हें गदर आंदोलन का नेतृत्व संभालने के लिये कहा रासबिहारी पहले ही बाघा जतिन के सम्पर्क में थे। रासबिहारी ने सान्याल को पंजाब में स्थिति के आंकलन के लिये भेजा। एक सैनिक कृपाल सिंह की जासूसी के कारण 21 फरवरी 2015 का प्रस्तावित सैनिक विद्रोह असफल हो गया क्योंकि ब्रिटिश सरकार को भनक लग गई तथा गदर आंदोलन के क्रान्तिकारी गिरफ्तार कर लिये गये। पर रासबिहारी पकड़े न जा सके। ये 12 मई 1915 को रविन्द्रनाथ टैगौर के एक रिश्तेदार का भेष बदलकर कलकत्ता से जापान के लिये चले गये।

अगले तीन वर्षों में इन्हें 17 बार आवास बदलना पड़ा। तब जापान प्रथम विश्व युद्ध में ब्रिटेन का मित्र देश था तथा रासबिहारी के प्रत्यर्पण में रूचि ले रहा था। 1918 में इन्होंने तोसिको नामक जापानी लड़की से शादी कर ली। लड़की के पिता एक रेस्तरां के मालिक थे। रासबिहारी ने वहाँ कढ़ी नामक व्यंजन बनाना सिखाया तथा भारतीय पाककला को जापान में प्रसिद्ध कराया। इस शादी से इन्हें एक लड़का व एक लड़की हुई। 1923 में ये जापानी नागरिक बन गये। फिर इन्होंने एक पत्रकार व लेखक का जीवन जीना शुरु किया तथा जापानी में भारत के स्वतन्त्रता संघर्ष के सम्बन्ध में पांच किताबें लिख डाली।

28 से 30 मार्च 1942 को इन्होंने टोक्यो में एक सभा का आयोजन किया जिसका उद्देश्य भारत की आजादी के लिये सशस्त्र संघर्ष के तरीकों पर विचार करना था। यह द्वितीय विश्व युद्ध का समय था तथा जापान अमेरिका व एशिया दोनों क्षेत्रों में जीत रहा था। भारतीय क्रान्तिकारी जापान की सैन्य शक्ति का लाभ उठाना चाहते थे तथा जापान ब्रिटिश भारत पर हमला करना चाहता था। अतः इस सभा में ''इण्डियन इंडिपेंडेन्स लीग'' की स्थापना की गई। इसमें भारत को आजाद कराने के लिए सेना खडी करने का आह्वान किया गया। 22 जून 1942 को बैंकाक में लीग की एक बैठक हुई जिसमें रासबिहारी बोस ने सुभाष चन्द्र बोस को लीग में शामिल होने तथा इसका नेतृत्व सम्भालने के लिये अध्यक्ष बनने का न्यौता दिया। मलाया व बर्मा मोर्चा पर जापानी सेना ने ब्रिटिश सेना के जो भारतीय सैनिक बंधक बनाये थे उनको रासबिहारी ने राष्ट्र की आजादी के लिये लडने को प्रेरित किया तथा इस प्रकार 01 सितम्बर 1942 को लीग की सैन्य शाखा आजाद हिन्द फौज का गठन किया गया। रासबिहारी ने इस फौज का झण्डा चुना तथा उसे सुभाष चन्द्र बोस को सौंपा। यह दृष्टव्य है कि जापानी सैनिकों के भारतीय सैनिकों के प्रति बुरे व्यवहार का रासबिहारी ने विरोध किया जिस पर इन्हें फौज से निकाल दिया गया। बाद में जापानी सरकार ने इन्हें पुनः सम्मानित किया। तब तक सुभाष चन्द्र बोस के नेतृत्व में आजाद हिन्द फौज भारत में ब्रिटिश राज के लिये एक खतरा बन चुकी थी। वस्तुतः आजाद हिन्द फौज के रूप में रासबिहारी बोस ने भारत की आजादी के युद्ध में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह खेद का विषय है कि आजादी के बाद भारत सरकार ने एक डाक टिकट जारी करने के सिवाय रासबिहारी बोस को कोई सम्मान नहीं दिया और ना ही उनके पार्थिव अंशों को भारत लाने का कोई प्रयास किया।

आर्यसमाज के महाधन

आर्यसमाज के विप्र योद्धा शास्त्रार्थ महारथी अमर स्वामी सरस्वती

—मनमोहन कुमार आर्य

मध्यकाल के अन्धकारमय युग के पश्चात् महर्षि दयानन्द जी ने पौराणिक, मुस्लिम ईसाई एवं अन्य मतावलम्बियों से भिन्न–भिन्न धार्मिक व सामाजिक विषयों पर शास्त्रार्थ करके सत्य–असत्य का निर्णय करने में सहायक शास्त्रार्थ परम्परा को पुनर्जीवित किया था। महर्षि दयानन्द जी के अनुपम शिष्य स्वामी अमर स्वामी सरस्वती जी ने अपनी अद्भुद प्रतिभा से अनेक मतों का गहन ज्ञान प्राप्त कर वैदिक धर्म के प्रचार के साथ वेदेतर मतानुयायियों से सहस्राधिक शास्त्रार्थ कर विजयी बने। उन्होंने जीवन भर शास्त्रार्थ परम्परा का पोषण किया। उन्होंने अपने ज्ञान, पुरुषार्थ एवं कार्यों से ऋषि दयानन्द के यश को बढ़ाया है।

संन्यास ग्रहण से पूर्व स्वामी जी ठाकुर अमर सिंह के नाम से जाने जाते थे। जिला बुलन्दशहर के अरणियां ग्राम में वत्स गोत्रिय ठाकुर टीकम सिंह चौहान के यहां बैसाख कृष्ण 2, 1951 विक्रमी (अप्रैल, 1894) को आपका जन्म हुआ था। पिता टीकम सिंह ने अनूप शहर में गंगा स्नान के अवसर पर संसार के गुरु महर्षि दयानन्द जी को व्याख्यान देते हुए देखा था।

ठाकुर अमर सिंह जी की शिक्षा ग्राम अरणियां से आरम्भ हुई। राधाकृष्ण संस्कृत पाठशाला खुर्जा में पं0 चण्डी प्रसाद एवं पं0 परमानन्द जी के सान्निध्य में भी आप रहे। आपके चचेरे भाई कु0 सुखलाल आर्यमुसाफिर

आपको पं0 भोज दत्त आर्य मुसाफिर विद्यालय, आगरा लाये जहां आपने सन् 1914 से 1918 तक अध्ययन किया। यहां ऋषिभक्त विद्वान पं0 बिहारी लाल शास्त्री से आपने संस्कृत एवं मौलवी करीमुद्दीन तथा मौलवी फाजिल से उर्दू, फारसी के साथ कुरआन का अध्ययन किया। भागवत आदि पुराणों का अध्ययन करते हुए इसमें अनेक बुद्धि विरुद्ध वर्णनों एवं अश्लीलता देखकर सभी पुराणों से आपको घृणा हो गई। अतः आप आर्यसमाजी बन गए।

धौलपुर के महाराजा उदयभान सिंह एवं उनके प्रधान मंत्री काजी अजीमुद्दीन द्वारा आर्यसमाज मन्दिर गिरवाये जाने के विरुद्ध आर्यसमाज द्वारा सत्याग्रह किया गया था। इस सत्याग्रह में पं0 बिहारी लाल शास्त्री, महापण्डित राहुल सांस्कृत्यायन (तब केदारनाथ पाण्डेय), मौलवी महेश प्रसाद के साथ ठाकुर अमर सिंह जी भी शामिल हुए थे। यह सत्याग्रह किन्हीं कारणों से असफल रहा।

आपके गुरु पं० बिहारी लाल शास्त्री

अपने समय के महान विद्वान रहे हैं। अमर सिंह जी के गुणों का उल्लेख कर वह लिखते हैं–**''अमर स्वामी जी ने संस्कृत, अरबी, उर्दू तथा हिन्दी गुरुमुख से पढ़ी है। गुरु से प्राप्त ज्ञान को उन्होंने स्वाध्याय द्वारा शतगुणा कर लिया था..... उनका सबसे बड़ा गुण था सबका हितकारक, सर्वप्रिय व जीवनमुक्त सा रहना।''** अन्यत्र शास्त्री जी लिखते हैं **''गुरु भक्ति, बड़ों का सम्मान, परिश्रम ..... ये सब गुण उनमें जन्मजात थे। विद्यालय के दिनों में शास्त्री जी एवं मौलवी करीमुद्दीन उन्हें पढ़ाते थे। रात्रि में डॉ0 लक्ष्मीदत्त जी भाषण शैली, शास्त्रार्थ के ढंग और इस्लाम सम्बन्धी विशेष ज्ञान की शिक्षा देते थे। तीन वर्षों में अमर सिंह जी शास्त्रार्थ कला में दक्ष हो गए और पंजाब प्रादेशिक सभा में उपदेशक हो गए। उपदेशक रहते हुए अमर सिंह जी ने अपने बुद्धि बल और मनोयोग से इतना स्वाध्याय किया कि इस समय (सन् 1978 में) उन्हें सर्व शास्त्रों, मतों के ग्रन्थों का मर्मज्ञ विद्वान कहा जा सकता है। शास्त्रार्थ कानन के तो वह स्वतन्त्र केसरी ही हैं।''** शास्त्री जी का अमर सिंह जी पर निम्न पद्य भी उनके व्यक्तित्व को समझने में सहायक है:

एक ही शौक इनका, एक ही दिल में लगन।
धर्म प्रेमी सदाचारी देश के बन जाये जन।।

आर्य मुसाफिर उपदेशक विद्यालय, आगरा से सन् 1918 में स्नातक बनने के पश्चात् डी.ए.वी. आन्दोलन के प्रमुख सूत्रधार महात्मा हंसराज जी की प्रेरणा पर आपको आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा द्वारा पंजाब, सिन्ध एवं बिलोचिस्तान आदि में वैदिक धर्म के प्रचार हेतु उपदेशक नियुक्त किया गया। उपदेशक के रूप में कार्य करते हुए सन् 1928 में लाहौर में आपने **''दर्शनानन्द उपदेशक मंडल''** एवं **''दर्शनानन्द उपदेशक विद्यालय''** की स्थापना की। **सन् 1927 में आप होशियारपुर के पुरोहित विद्यालय के आचार्य बने। सन् 1944 में मोहन आश्रम, हरिद्वार में आरम्भ किए गए आर्योपदेशक महाविद्यालय का आपको आचार्य बनाया गया। आर्यसमाज हापुड़ में चलाये गये उपदेशक विद्यालय में भी आप सन् 1963 में आचार्य रहे।**

जब आप हरिद्वार में आचार्य थे तो सायंकाल केसरिया वेशभूषा धारण किए अपने शिष्य ब्रह्मचारियों को साथ लेकर **''हर की पौड़ी''** जिसे महर्षि दयानन्द जी ने हाड़ की पौड़ी कहा है, वहां जाकर बैठते थे। हिन्दू मत के अन्धविश्वासों का उल्लेख कर आपने एक बार देहरादून में अपने प्रवचन में बताया था कि वृद्ध मातायें व बहिनें वहां उनके शिष्यों के निकट खीर–पूड़ी लेकर आती थीं और उनके केसरिया वस्त्रों से प्रभावित होकर उन्हें पकवान खाने एवं दक्षिणा लेने की प्रार्थना करती थीं परन्तु उनका आचार्य होते हुए भी श्वेत वेशभूषा होने के कारण कोई महिला उनकी ओर देखती तक न थीं।

वैदिक धर्म ईश्वर से निःसृत सार्वभौमिक धर्म है। अज्ञानता के कारण ही संसार में नाना मत– मतान्तर एवं अंधविश्वास प्रचलित हुए हैं। मत–मतान्तरों के आग्रही अनुयायियों को सत्य से परिचित कराना एवं सत्य को मनवाना धर्म प्रचारक का कर्तव्य होता है। कुछ ऐसा ही कर्तव्य एक अध्यापक अपने विद्यार्थी के प्रति एवं चिकित्सक अथवा परिचारक रोगी के पति

करते हैं। अमर सिंह जी ने भी सत्य की स्थापना के उद्देश्य से पौराणिक, जैनी, ईसाई, मुस्लिम, कादियानी अहमदियों आदि विभिन्न मतों के विद्वानों से अनेक विषयों पर शास्त्रार्थ किए। इन शास्त्रार्थों में प्रतिपक्षी विद्वानों में प्रमुख कविरत्न पं0 अखिलानन्द, पं0 माधवाचार्य, पं0 कालूराम शास्त्री, पं0 भीमसेन, पं. कृष्ण शास्त्री, पं0 राजेन्द्र कुमार शास्त्री, स्वामी कर्मानन्द (जैनी) पादरी अब्दुल हक मन्तकी, पादरी एस.एम. पाल, पादरी दला राम, पादरी जगन्नाथ, मौलाना सनाउल्ला अमृतसरी, मौलाना लाल हुसैन अख्तर, मौलवी फजल मुहम्मद 'शर्मा' मुस्लिम हाफिज रोशन अली, मौलवी कासमी अली, मौलवी अब्दुल रहमान कादियानी अहमदी हैं। शास्त्रार्थ के प्रभाव से मौलाना मुहम्मद अली ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म स्वीकार किया था और श्री रोशन लाल नाम ग्रहण किया था।

सन् 1935 में होशियारपुर में पौराणिक मतानुयायी विधवा विवाह के प्रश्न पर विभाजित हो गए। दोनों पक्षों में शास्त्रार्थ की स्थिति उत्पन्न हो गई। विधवा विवाह के पोषक पौराणिक बन्धु अपनी ओर से अमर सिंह जी को शास्त्रार्थ में लाये। उन्होंने विधवा विवाह के पक्ष में वेदमन्त्र **''या पूर्वम् पतिम वित्तवा अयान्यम विन्दते परम।''** को प्रस्तुत किया। प्रतिपक्षी पौराणिक विद्वान पं0 अखिलानन्द शास्त्री एवं पं0 कालूराम शास्त्री के इस प्रमाण से सहमत न होने पर अमर सिंह जी ने इस मंत्र का पं0 अखिलानन्द शास्त्री द्वारा **''वैधव्य विध्वंसन चम्पू''** में किया हुआ अर्थ प्रस्तुत कर उन्हें निरुत्तर कर दिया। ठाकुर अमर सिंह जी ने अनेक प्रमाण और दिए तथा सभी आपत्तियों का निराकरण किया। शास्त्रार्थ में विधवाओं का पुनर्विवाह शास्त्र सम्मत मानने वालों का पक्ष विजयी रहा। इस विजय पर हर्षोल्लास व्यक्त करने के लिए अमर सिंह जी को रथ में बैठाकर हजारों की संख्या में पौराणिकों ने होशियारपुर नगर में एक जलूस निकाला। वर्तमान समय में पौराणिकों में विधवाओं का पुनर्विवाह अपवादों को छोड़कर पूर्णतया प्रचलित है जिसका श्रेय स्वामी दयानन्द एवं अमर स्वामी जी आदि विद्वानों को है।

राजधनवार (बिहार) में दस सहस्र श्रोताओं की उपस्थिति में एकबार अमर सिंह जी का पौराणिक विद्वान पं0 अखिलानन्द शर्मा एवं पं0 माधवाचार्य से शास्त्रार्थ हुआ। शास्त्रार्थ में नियोग, सन्तानोत्पत्ति प्रकरण एवं शिशु पालन आदि विषयक महर्षि दयानन्द की मान्यताओं पर पौराणिक विद्वानों ने अनुचित आक्षेप किए। अमर सिंह जी ने वेद, महाभारत एवं पुराणों से नियोग को उचित एवं वेदसममत सिद्ध किया। गरुण पुराण के श्लोक **''ऐ पुत्री गुर्वनुज्ञात देवरः पुत्र काम्यया, स पिण्डो वा स गोत्रो व घृताभ्यकतो।''** को अमर सिंह जी से सुनकर पौराणिक विद्वानों के होश उड़ गये। पौराणिकों के सभी आक्षेपों का सप्रमाण निराकरण कर अमर सिंह जी ने पुराणों की अवैदिकता पर आक्षेप किए। ब्रह्मवैवर्त पुराण के आधार पर अमर सिंह जी ने कृष्ण रुकमणी के विवाह में अनेक पशुओं को मारकर भोजन बनाने एवं रुकमणी के पिता द्वारा एक लाख गायों के मारने के आदेश का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि गोहत्या के विरुद्ध अधिनियम बनाने में ऐसे स्थल ही बाधक हैं। **शास्त्रार्थ में पौराणिक मत की पराजय के फल स्वरूप हजारों की संख्या में लोगों ने वैदिक धर्म ग्रहण किया। सनातन धर्म सभा भंग हो गई। जिस व्यक्ति ने अपनी भूमि बेचकर**

पौराणिक विद्वानों को शास्त्रार्थ के लिए बुलाया था वह भी हाथों में ''ओ३म्'' ध्वज लेकर महर्षि दयानन्द एवं आर्यसमाज की जय–जयकार कर रहा था।

एक शास्त्रार्थ में पं0 अखिलानन्द ने श्रोताओं से कहा, **''मैं भी पहले आर्यसमाजी था और अब आर्यसमाज की छीछालेदर कर रहा हूं।''** आगे उसने कहा–**''इस घर को आग लग गई, घर के चिराग से''** इसके उत्तर में अमर सिंह जी ने कहा, **''ठीक है कि यह मिट्टी के तेल का चिराग हमारे घर में जलता था, हमारे घर में दुर्गन्ध फैलाता था और हमारे घर की दीवारों को भी काली करता था। हमारे घर को भी इस चिराग (अखिलानन्द) ने आग लगानी आरम्भ कर दी थी। हमने हानि पहुंचने से पूर्व ही उस आग को बुझा लिया और इस मिट्टी के तेल वाले चिराग को उठाकर बाहर फेंक दिया। अब हमारे यहां बिजली के बड़े–बड़े बल्व (स्वामी अभेदानन्द जी, आचार्य रामानन्द, पं. गंगाधर आदि की ओर संकेत कर जो मंचस्थ थे) जगमग जगमग कर रहे हैं और यह मिट्टी का चिराग उस घर में टिमटिमा रहा है जहां घटाटोप अंधेरा था।**

अमर सिह जी कण्ठ संगीत एवं वाद्य संगीत में भी प्रवीण थे। आर्यसमाज बछोमली सम्प्रति पाकिस्तान में है। इसके एक शास्त्रार्थ में पौराणिक पं0 माधवाचार्य ने आप पर व्यंग कर कहा––**''लो आ गये मुझसे शास्त्रार्थ करने। यह लाहौर में सारंगी बजाते थे, अब शास्त्रार्थ करेंगे।''** इसके उत्तर में अमर सिंह जी ने शालीनतापूर्ण शब्दों में पं0 माधवाचार्य को कहा **''सारंगी बजाने से हमारा सिद्धान्त कम नहीं हो जाता और न ही मेरी योग्यता कम जो जायेगी प्रत्युत मैं भी पौराणिक भगवानों की पंक्ति में सम्मलित हो गया।''** आगे ठाकुर अमर सिंह जी बोले– **''आपके शिव जी डमरु बजाया करते थे, श्री कृष्ण बांसुरी बजाया करते थे। वाद्य यन्त्र बजाने वाले थे तुम्हारे देव। आपके नारद जी वीणा बजाया करते थे।'' इस उत्तर से लज्जित हुए माधवाचार्य को कुछ सूझा नहीं कि वह क्या कहें।**

स्वामी जी यथायोग्य उत्तर देने में भी सिद्धहस्त थे। दानापुर (बिहार) में एक युवक ने सत्संग के पश्चात शंका की कि औरत व जहर में क्या अन्तर है? स्वामी जी ने उत्तर में कहा– ''औरत वह है जिसने तुम्हें जन्म दिया है और विष वह है जो तुम्हें मार सकता है। एक का अनुभव तुम्हें हो चुका है, दूसरे की परीक्षा करके देख लो। अन्तर का पता तुम्हें ही नहीं, तुम्हारे सगे–सम्बन्धियों को भी चल जायेगा।''

अमर सिंह जी की दो पुत्रियां व तीन पुत्र थे। उनके विवाह आदि के दायित्वों से मुक्त होकर 73 वर्ष की अवस्था में सन् 1967 में अमर स्वामी जी ने आर्यसमाज स्थापना दिवस चैत्र शुक्ल पंचमी के दिन आर्य वानप्रस्थ सन्यास आश्रम, ज्वालापुर में स्वामी विवेकानन्द तीर्थ से संन्यास की दीक्षा ली। आर्यजगत के विख्यात संन्यासी एवं उर्दू मिलाप पत्र के संस्थापक सम्पादक महात्मा आनन्द स्वामी ने आपका नया नाम अमर स्वामी परिव्राजक प्रसिद्ध किया। संन्यास लेने के पश्चात आपने अपने परिवार से कोई सम्पर्क नहीं रखा यद्यपि इस कारण आपको अनेक शारीरिक एवं मानसिक दुःख सहन करने पड़े।

अमर स्वामी जी धन बटोरने और सम्मान पाने के लिए आर्यसमाज के प्रचारक, शास्त्रार्थ महारथी या संन्यासी नहीं बने थे। उनका सब धन उपकार में लगता था। आपने पचासों उपदेशक, भजनोपदेशक, अध्यापक एवं आर्य पुरोहित बनाये जिन्होंने सेवा एवं धर्म प्रचार के साथ ही अपने परिवार का पालन भी भली–भांति किया। स्वामी जी हैदराबाद सत्याग्रह सन् 1939 तथा गोरक्षा आन्दोलन में जेल भी गए। स्वामी जी के निकट सहयोगियों के अनुसार वह कांग्रेस आन्दोलन में इसलिए सम्मिलित नहीं हुए कि उन दिनों वह पंजाब में थे और वहां का वातावरण खिलाफत आन्दोलन के कारण साम्प्रदायिकता से दूषित बन गया था।

15 सितम्बर, 1925 ई0 को अमर सिंह जी, रिसर्च स्कालर पं० भगवददत्त तथा वैद्य राम गोपाल जी, लाहौर के साथ डी0ए0वी0 कालेज के लालचन्द पुस्तकालय के चबूतरे पर बैठे ग्रन्थों में कुछ प्रमाण खोज रहे थे। इसी बीच कालेज के सामने लाला लाजपत राय के हत्यारे पुलिस उपअधीक्षक साण्डर्स की भगत सिंह एवं राजगुरु ने हत्या कर दी। यह सभी देशभक्त इन तीनों शोध विद्वानों के सामने से होकर छात्रावास की ओर भाग गये। यद्यपि हमारे इन विद्वानों ने इन वीर देशभक्तों को देख लिया था परन्तु कुछ देर बाद पुलिस के पहुंचने और पूछताछ करने पर इन विद्वानों ने यह कह कर पुलिस को भ्रमित किया कि हल्ला–गुल्ला तो उन्होंने सुना परन्तु कार्य में तल्लीन होने के कारण वह पहली बार पुलिस के ही दर्शन कर रहे हैं। यह झूठ इतनी सफाई से बोला गया कि पुलिस ने उनका विश्वास कर लिया। क्रान्तिकारियों की प्राण रक्षा के लिए बोला गया यह झूठ स्तुत्य है।

ठाकुर अमर सिंह जी अपने साथियों के प्रति सच्ची सहानुभूति रखते थे। एक बार एक नया भजनोपदेशक पहली बार स्वामी जी के साथ प्रचारार्थ एक आर्यसमाज में गया। समाज के मंत्री जी ने रात्रि के समय अमर स्वामी जी को दूध दिया परन्तु भजनोपदेशक को नहीं दिया। इस पक्षपात के लिए उन्होंने मंत्री को फटकार सुनाई। इसका यह प्रभाव हुआ कि वह भजनोपदेशक स्वामी जी का भक्त बन गया। यह घटना उसने न केवल प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु जी को ही बताई अपितु अन्यत्र भी वह इस घटना को प्रस्तुत कर स्वामी जी की प्रशंसा करता था।

आर्यसमाज की नींव प्रजातन्त्र पर है। देहरादून के कीर्तिशेष विद्वान प्रो० अनूप सिंह जी कहते थे कि प्रजातन्त्र में लोगों के सिर गिने जाते हैं परन्तु उन्हें तोला नहीं जाता। अमृतसर के एक आर्यसमाज में एक नेता ने चुनाव में विजयी होने के लिए बड़ी संख्या में नास्तिकों को आर्यसमाज का सदस्य बनाया जिन्होंने सन्ध्या हवन का उपहास किया। इस नेता ने अमर स्वामी जी की उपस्थिति में अवैदिक मतों को उखाड़ने तथा वैदिक अध्यात्मवाद के प्रचार के पक्ष में भाषण दिया। इसका उल्लेख कर स्वामी जी ने अपने सहयोगियों से कहा कि नास्तिकों को आर्यसमाज के मंच पर लाने वाले अब वैदिक अध्यात्मवाद की बात किस मुंह से करते हैं? आर्यसमाज में उन दिनों आरम्भ हुई पद प्रतिष्ठा प्राप्ति के इस रोग पर स्वामी जी की यह अन्तःपीड़ा आज बढ़ती ही जा रही है।

श्री दौलत राम शास्त्री, अमृतसर के अनुसार अमर स्वामी जी ने कुछ निर्धन अनाथों को सहायता देकर अच्छे स्थानों पर लगवाया। स्वामी जी का यह कार्य निष्काम भाव से उन

अनाथों की रक्षा व परोपकार का उदाहरण है। स्वामी जी ने नए उपदेशकों को सदैव प्रोत्साहित किया। देश भर की आर्यसमाजों में आपके शिष्य फैले हुए है।

एक बार प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, पंजाब का एक उपदेशक पौराणिकों में जा मिला। संगठन के हित में महात्मा हंसराज जी ने उसे अधिक वेतन का प्रलोभन देकर पुनः सभा में मिला लिया। अमर स्वामी जी इस उपदेशक के वरिष्ठ थे। फिर भी उन्होंने वेतन बढ़ाने की मांग नहीं की। इस पर महात्मा हंसराज जी ने आर्य गजट के सम्पादक चौधरी वेदव्रत से कहा –**'आर्यसमाज व जाति के हित में ठाकुर अमर सिंह के इस त्याग को देख मेरा सिर उनके सामने झुक जाता है।'** स्वयं महात्मा हंसराज जी ने प्रादेशिक सभा अथवा कालेज से बिना वेतन एवं कोई सुविधा लिए निःस्वार्थ भाव से 25 वर्षों से अधिक अवधि तक सेवा की थी।

सन् 1991 में प्रो0 राजेन्द्र जिज्ञासु जी द्वारा आर्यसमाज, हिसार में स्वामी जी से मृत्यु–इच्छा पूछने पर उन्होंने कहा था, **''पहली व दूसरी पीढ़ी के आर्यों ने अपना घर–बार फूंक कर सभा, संस्थायें व समाज बनाये, परन्तु वर्तमान में ऐसे लोग समाज में घुस आए हैं जो सभा, संस्थाओं व समाजों को फूंक कर अपना घरघाट बना रहे हैं। ऐसे लोगों की आर्यसमाज से रक्षा करो।''** इस अवसर पर स्वामी जी ने यह भी कहा था, **''पहले समाज मन्दिर तो कच्चे होते थे परन्तु समाजी बड़े पक्के होते थे। अब समाज मन्दिर पक्के बन गये हैं परन्तु आर्यसमाजी कच्चे हो गये हैं।''** आर्यजगत के एक अन्य प्रमुख विद्वान पं0 रामचन्द्र देहलवी जी ने भी अपनी मृत्यु–इच्छा कुछ इसी प्रकार की थी। उन्होंने कहा था कि **सफेद, लाल व काली टोपी धारी राजनैतिक व्यक्तियों से समाज को बचाओ।**

स्वामीजी अपने पूर्वजन्म में संस्कृत के विद्वान थे और पानी में डूबकर मरे थे। यह घटना स्वामीजी को इस जन्म में भी याद थी। हैदराबाद से मुक्त होकर जब स्वामी जी अहमदनगर आये तो पूर्वजन्म की संस्कृत पाठशाला एवं सरोसर जहां वह डूबे थे, संयोगवश देखने को मिल गये, जिसने पूर्वजन्म की उनकी याद को ताजा कर दिया।

आर्यसमाज बड़ा बाजार, कोलकत्ता ने आपका सार्वजनिक अभिनन्दन किया था। उन्हें सम्मानार्थ जो धनराशि दी गयी थी वह उन्होंने समाज के अधिकारियों को आर्य साहित्य के सृजन एवं प्रकाशन हेतु भेंट कर दी थी। स्वामी अमर स्वामी जी आयुर्वेदिक तथा युनानी चिकित्सा पद्धति से चिकित्सा करने में भी सिद्धहस्त थे और अरनियां के **''अमर औषधालय''** के माध्यम से आपने लोगों की धर्मार्थ चिकित्सा की। रसायनशाला और औषधि निर्माण का भी आपको ज्ञान था। आप रोगियों को अपनी बनाई हुई औषधियां ही प्रायः दिया करते थे। आपकी बनाई अमर सुधा तथा अमर घुट्टी का जादू की तरह प्रभाव होना प्रसिद्ध था। सन् 1959 में आपके द्वारा आर्यसमाज, विधानसरणी, कलकत्ता में **''महर्षि दयानन्द दातव्य औषधालय''** आरम्भ किया गया था। यहां रहकर आपने औषधियां बनाई एवं रोगियो ंका उपचार किया।

स्वामी जी शास्त्रीय संगीत एवं नृत्यकला में भी पारंगत थे। ठुमरी, गजल, कव्वाली,

ख्याल तथा तराना आदि गाने का आपको गुरु माना जाता था। स्वर तथा लय पर आपका पूरा अधिकार था। सारंगी, तबला, हारमोनियम, सितार आदि प्रत्येक वाद्य आपके हाथ में आते ही स्वमेव बज उठता था। आपने शास्त्रीय गायन पं० महादेव कत्थक से सीखा था। अमर स्वामी जी कवि हृदय वाले विद्वान थे। आपने हिन्दी तथा उर्दू में समान रूप से कविता की। आपकी एक रचना **''अख्लिाधार अमर सुख धाम, एक सहारा तेरा नाम''** आर्यसमाज में लोकप्रिय रही है। हमने इसे आपके श्रीमुख से आर्यसमाज धामावाला, देहरादून में कई बार सुना। सन् 1939 में हैदराबाद रिसासत में वहां के मजहबी शासक ने अपनी हिन्दू प्रजा पर अनेक अत्याचार किये। इसके विरुद्ध आर्यसमाज की ओर से वहां सत्याग्रह किया गया। लगभग 1 लाख लोग इस सत्याग्रह में सम्मिलित हुए थे। स्वामी अमर स्वामी जी भी सत्याग्रह कर जेल गये थे। वहां आपने एक प्रसिद्ध गीत रचा जिसके शब्द हैं––**''कायम निजाम रह चुका, हो चुकी हुक्मरानियां। जुल्मों–सितम बिला वजह मिटने की है निशानियां।''** यहीं पर स्वामी आत्मानन्द जी ने भी एक गीत की रचना की थी। उनका रचा हुआ गीत था **''दयानन्द की है पताका रंगीली, सजी ओ३म् नाम वाली सजीली।''**

स्वामी जी ने आर्यजगत आदि कई पत्र पत्रिकाओं का सम्पादन किया। आपके खोजपूर्ण लेख आर्यसमाज की पत्र–पत्रिकाओं में छपते रहते थे। रात दिन प्रचार कार्यों में व्यस्त रहकर भी आपने गवेषणापूर्ण पर्याप्त साहित्य का सृजन किया। आर्य सिद्धान्त सागर, प्रमाण महापर्व, विधर्मियों की शुद्धि अर्थात् उनका भारतीयकरण, जीवित पितर एवं हनुमान जी बन्दर थे या मनुष्य? आदि उनके प्रमुख ग्रन्थ हैं। रावण वध क्या विजयादशमी को हुआ था? क्या द्रोपदी के पांच पति थे? रामायण दर्पण, गीता और दयानन्द, गीता और वेद, मूर्ति पूजा से हानियां आदि आपकी कुछ अन्य प्रसिद्ध पुस्तकें हैं। आपके शास्त्रार्थ ''निर्णय के तट पर'' नामक ग्रन्थ चार खण्डों में प्रकाशित हैं।

कैंसर रोग से पीड़ित होकर अपने जीवन के 94वें वर्ष में 4 सितम्बर, 1987 को गाजियाबाद में स्वामी अमर स्वामी जी महाराज का महाप्रयाण हुआ। अन्तिम दिनों में भी आप शोध कार्य करने में व्यस्त रहते थे। स्वामी जी के निकटतम आर्य विद्वान प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु ने उन्हें अपने निम्न श्रद्धा सुमन भेंट किये हैं:

काम किये निष्काम धर्म हित बढ़ चढ़ करके।
लड़े धर्म हित सदा तली पर सिर धर करके।।

संकट सहे अनेक नहीं किंचित घबराये।
गुणी विप्र–मूर्तिमान सभी के पूज्य कहाये।।

हमारा सौभाग्य है कि हमें सन् 1970–1980 के दशक में स्वामी अमर स्वामी जी महाराज के आर्यसमाज धामावाला, देहरादून में अनेक बार दर्शन करने का अवसर मिला। हमने यहां पर उनकी कथायें सुनी, ईश्वर भक्ति की स्वरचित मधुर एवं हृदय को झकझोरने वाली पंक्तियों का पाठ सुना। स्वामी जी आर्यसमाज के सत्संगों में प्रवचन के बाद शंका समाधान भी करते थे। आजकल के विद्वानों ने यह कार्य करना छोड़ दिया है। स्वामी अमर स्वामी जी ने धर्म, देश व जाति की सेवा के जो प्रेरक कार्य किये हैं उनके कारण वह सदा अमर रहेंगे। स्वामी जी महाराज को हमारी श्रद्धांजलि एवं भावांजलि अर्पित है।

हनुमान की चेतावनी और राजनीतिमत्ता

–ईश्वरी प्रसाद प्रेम जी

बाली का वध कर श्रीराम भाई लक्ष्मण सहित प्रवर्षण पर्वत पर निवास करके वर्षा ऋतु का समय व्यतीत करते हैं। उधर सुग्रीव राज्य, ऐश्वर्य और स्त्री आदि के मिल जाने से भोगों में फँसकर राम कार्य को प्रायः भूल ही जाते हैं। यह देख राजनीति–विशारद श्री हनुमान जी सुग्रीव को राम कार्य की स्मृति कराते हुए कहते हैं–

''महाराज! आपने राज्य प्राप्त कर लिया, यश भी उपलब्ध किया, तथा कुल–कीर्ति व लक्ष्मी भी ले ली, पर अभी मित्र–संग्रह शेष है, सो वह भी जल्दी प्राप्त कर लेना चाहिए। क्योंकि जो समय पर मित्रों की प्रसन्नता प्राप्त कर लेता है, उसका राज्य, कीर्ति, लक्ष्मी और यश चारों ओर बढ़ता है।

इसलिए राजन्! अब आप सब कामों को छोड़ कर अपनी कुल–प्रतिष्ठा बढ़ाने और राज्य दिलाने वाले राम का कार्य करें। एक तो वह आपके मित्र हैं, दूसरे आपके प्रथम उपकारी हैं क्योंकि पहिले उन्होंने इन्द्र सम बली व प्रतापी बाली को मार कर आपके प्राण, धन, स्त्री और पुत्र की ही रक्षा नहीं की, किन्तु आपको महाराजा बना दिया है। अतः अब उचित यही है कि आप अपने वीर और चतुर योधाओं को भेज कर सीता का पता लगायें।''

हनुमान के इस आवश्यक और हितकारी सन्देश को सुन सुग्रीव ने सेनाध्यक्ष नील से कहा कि तुम चारों दिशाओं में सीता की सुध लाने के लिये योग्य दूत भेजो और जहां–जहां तुम्हारा जाना जरुरी ही वहाँ–वहाँ जाओ।

इधर सुग्रीव तो नील को आदेश देकर फिर अपने काम में लग गया और उधर वर्षा के बीत जाने और आकाश के निर्मल तथा मार्गों के शुद्ध हो जाने के कारण स्नेह व पत्नी–धर्म पालन के कारण राम सीता का स्मरण करने लगे। उन्होंने लक्ष्मण से कहा कि राज–भोग में पड़ जाने के कारण सुग्रीव को अपने प्रतिज्ञा किये वचनों का भी स्मरण नहीं रहा और किष्किन्धा को प्राप्त करके उसे यह भी स्मरण नहीं रहा, कि शुभ व अशुभ वचनों के पालने वाला और द्वार पर बैठे हुए अर्थियों के अर्थ पूरा करने वाला पुरुष ही वीर तथा श्रेष्ठ है।

''लक्ष्मण! तुम किष्किन्धा में जाकर उस प्रमादी से कह दो कि यदि तुम सत्य से फिरोगे और सीता पाने में सहायता न करोगे, तो हम तुम्हें भी बन्धुओं सहित उसी बाण से हनन कर देंगे और उसी मार्ग का यात्री बनायेंगे, जिसका तुम्हारा भाई बाली बना है क्योंकि हमारे लिये वह मार्ग संकुचित नहीं है।''

लक्ष्मण का किश्किन्धा–गमन

राम के सन्देश को लेकर किन्चित् क्रोध युक्त होकर लक्ष्मण किष्किन्धा में सुग्रीव को समझाने के लिये चले। जब लक्ष्मण किष्किन्धा में पहुँचे तो वानरों ने उनका स्थान–स्थान पर स्वागत किया। कुछ दूर और आगे चले तो उन्हें युवराज अंगद मिले, जिन्होंने बड़ी नम्रता से उन्हें प्रणाम किया और सत्कार पूर्वक नगर दिखाते हुए उन्हें राजभवन की ओर ले चले तथा राजसभा एवं भवन में लक्ष्मण के आने की सूचना दी।

लक्ष्मण के सकोप आने का समाचार पाकर सुग्रीव बडे भय–भीत हुए। उन्होंने भय दूर करने के लिए मुख्य मंत्री और योद्धा हनुमान को बुला भेजा।

हनुमान के आने पर, सुग्रीव आसन से उठकर गुप्त विचार के स्थान में जाकर बोले, ''मंन्त्रिन्! मैं राम व लक्ष्मण से नहीं डर रहा, किन्तु मैंने जो प्रतिज्ञा करके, उसका पालन नहीं किया इससे डरता हूँ। इस कर्म से महात्मा राम जैसे मित्र का मुझ पर कोप हो गया है। यह सत्य ही है, कि मित्र बनाना सुगम है पर मित्रता को निभाना कठिन है–

सर्वथा सुकरं मित्र दुष्करं परिपालनम्।। कि0 ३२।७।।

तुम बताओ कि अब मैं इस अपराध का क्या प्रायश्चित करूँ?

हनुमान ने कहा–राजन्! श्रीराम का कोप सच्चा है, इसीलिए उन्होंने भाई लक्ष्मण को भेजा है। तुम प्रमाद में पड़कर अपने कर्तव्य को भूल गये हो। देखो, कब से आकाश निर्मल और मार्ग शुद्ध हो गये हैं, क्या तुमने कोई उपाय सीता के ढूँढ़ने का किया? इसलिये तो लक्ष्मण कोप युक्त होकर यहाँ आये हैं। अब हाथ जोड कर लक्ष्मण से क्षमा माँगने के सिवाय इस अपराध में कोई अन्य उपाय नहीं हो सकता।

राजन्! शास्त्र में लिखा है कि मंत्री पद पर नियुक्त मंत्रियों को राजा के हितकर वाक्य अवश्य कह देना चाहिए, इसीलिये मैंने निर्भय होकर यह निश्चित वचन कहा हैः–

नियुक्तै मंन्त्रिभिर्वाच्यो ह्यवश्यं पार्थिवोहितम्।
अत एव भयं त्यक्त्वा ब्रवीम्येव धृतं वचः।। कि0 ३२।१८।

अन्ततः हनुमान्जी की सम्मति से नीति–निपुण देवी तारा को आगे करके सुग्रीव यतिवर लक्ष्मण से मिले। महारानी तारा को क्षमा याचना करते देख आर्य लक्ष्मण ने उठकर उन्हें अभिवादन किया। उनका क्रोध पानी– पानी हो गया। इसी प्रकार श्री राम भी हनुमान जी के नीति कौशल से सर्वथा शान्त और मृदु हो गये।

सुग्रीव की महावीर के प्रति निष्ठा

इसके बाद जब श्री सीता की खोज के लिए सब दिशाओं में वानरों को भेजने की बातचीत हो रही थी, उस समय का वर्णन श्री वाल्मीकीय रामायण में देखने से मालूम होता है कि सुग्रीव का श्री हनुमान पर कितना भरोसा और विश्वास था तथा भगवान श्री राम को भी उनकी कार्य कुशलता पर कितना विश्वास था। वहां श्री राम के सामने ही सुग्रीव हनुमान से कहते हैं–

न भूमौ नान्तरिक्षे वा नाम्बरे नामरालये।
नाप्सु वा गतिभंग ते पश्यामि हरिपुंगव।।
सासुराः सहगन्धर्वाः सनागनरदेवताः।
विदिताः सर्वलोकास्ते ससागरधराधराः।।
गतिर्वेगश्व तेजश्च लाघवं च महाकपे।
पितुस्ते सह्शं वीर मारुतस्य महौजसः।।
तेजसा वापि ते भूतं न समं भुवि विद्यते।
तद्यथा लभ्यते सीता तत्वमेवानुचिन्तय।।
त्वय्येव हनुमन्नस्ति बलं बुद्धिः पराक्रमः।
देशकालानुवृत्तिश्च नयश्व नयपण्डितः।।
कि0 ४४।३–७

कपिश्रेष्ठ! तुम्हारी गति का अवरोध न पृथ्वी में, न अन्तरिक्ष में, न आकाश में और न देवलोक में अथवा जल में ही देखा जाता है। देवता, असुर, गन्धर्व, नाग, मनुष्य इनके सहित उन–उनके समस्त लोकों का समुद्र और पर्वतों सहित तुम्हें भली–भाँति ज्ञान है। महाकपे! तुम्हारी गति, वेग, तेज और फुर्ती–तुम्हारे महान् बलशाली पिता पवन के समान हैं। वीर! इस भूमण्डल पर कोई भी प्राणी तेज में तुम्हारी समानता करने वाला न कभी हुआ और न है। अतः जिस प्रकार सीता मिल सके, वह उपाय तुम्हीं सोचकर बताओ। हनुमान! तुम नीति शास्त्र के पण्डित हो, बल, बुद्धि, पराक्रम, देशकाल का अनुसरण और नीतिपूर्ण बर्ताव–ये सब एक साथ तुम में पाये जाते हैं।

उत्तराखण्ड के धार्मिक नेता, समाज सुधारक व स्वतन्त्रता सेनानी वीर जयानन्द भारतीय जी

–पं० उम्मेद सिंह विशारद

देवभूमि उत्तराखण्ड प्राचीन काल से ही बलिदानी भूमि रही है। यहीं के वीर जवान भारत माता की रक्षा हेतु सरहदों पर सर्वाधिक शहीद होते हैं। देवभूमि सम्पूर्ण संसार को संस्कृति व ज्ञान प्रदान करने वाली रही है। इसी धरती पर बड़े–बड़े धार्मिक व सामाजिक सुधारक हुए हैं आज हम वीर जयानन्द भारतीय स्वतन्त्रता सेनानी का संक्षिप्त परिचय लिख रहें है।

उत्तराखण्ड के जनपद पौडी गढवाल वीरोखाल अरकंडाई पट्टी सावली में 17 अक्टूबर 1881 को जयानन्द भारतीय का जन्म हुआ था। उनके पिता का नाम श्री छवि लाल और माता का नाम रैबेली देवी था। ये बचपन से ही गम्भीर और समाज सेवी प्रकृति के थे। वे मौन में बैठकर घण्टों तक एक टक आकाश के चाँद सितारे निहारा करते थे। उन्होंने सदियों से दासता की चक्की में पिसते हुए सुप्त मानवों में चेतना की अग्नि प्रज्जवलित की, और अपने साहसिक पराक्रम एवं कौशल से ऐसे कार्य किये कि अंग्रेजो का विशाल साम्राज्य भी दहल उठा।

ऐसे उत्साही समाज सुधारक युवा को कौन कैद कर सकता था। वह पिता की अनुमति पाकर नैनीताल, मसूरी, देहरादून गये। वह अंग्रेजो के स्वच्छ रहन–सहन, जाति विहीन व्यवस्था व समयबद्ध कार्य प्रणाली से अति प्रभावित हुए। और सोचने लगे सात समुद्र पार से आये हुए अंग्रेज, भारत में फूट डालकर राज्य कर रहे है। और यह अंग्रेज केवल अपनी बात करते हैं भारत के लोगो की पीड़ा से उन्हें कोई सरोकार नही था एक और ईसाई पादरी दूसरी और मुसलमान मौलवी भारत की भोली–भाली जनता को अपने धर्म में मिला रहे हैं। भारतीय जी को भी प्रलोभन दिया गया कि हिन्दु धर्म छोड दो किन्तु उन्होंने कहा मै अपना धर्म त्याग कर दूसरे धर्म अपनाने के बारे में सोच भी नही सकता हूँ।

भारतीय जी ने 1911 ई० से आर्य समाज के सत्संग में जाना प्रारम्भ कर दिया। आर्य समाजियों के सुन्दर सौम्य व्यवहार एवं स्वच्छ आचार–विचारों ने उन्हें आर्य समाज के और भी निकट ला दिया था। पं० टीकाराम कुकरेती जी ने उन्हें सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने को दिया। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर अपने जीवन का लक्ष्य ही बदल दिया और उत्तराखण्ड की तमाम धार्मिक सामाजिक राजनैतिक बुराइयों को दूर करने के लिये रण क्षेत्र में कूद पडे। उनकी अन्तरात्मा में ऐसा प्रकाश हुआ कि उनका जीवन ही पलट गया। आर्य समाज का साया उनको सदा–सदा के लिए मिल गया था, जिसमें रहकर वह सम्मान पूर्व स्वयं और शोषित समाज को भी जीना सिखा सकते थे।

एक घटना ने उन्हें विचलित कर दिया था,

आर्य समाज के प्रचारक बरेली से पं पुरुषोत्तम तिवारी जी शिल्पकारों से यज्ञ करा रहे थे और यज्ञोपवीत भी धारण करा रहे थे, और सवर्णो द्वारा शोषण व अत्याचारों के विरोध में भी ज्ञान दे रहे थे। इससे सवर्ण वर्ग नाराज हो गया और सभा में हंगामा मच गया तथा पं पुरुषोत्तम तिवारी से वाद विवाद करने लगे, पंडित जी तो वेदों के विद्वान थे और सत्य की रक्षा कर रहे थे, उन्होने सवर्णो से गरजते हुए कहा हम शास्त्र ही नही शस्त्रों से भी लड़ना जानते है और लाठी को इस प्रकार घुमाया सभी चुप कर गये। इस घटना से भारतीय जी अत्यंत निराश हुए और पंडित जी के साथ बरेली वापस लौट गये।

अंग्रेजी सेना में भर्ती– 10 मार्च 1918 ई0 में अंग्रेजी सेना में भर्ती हो गये, भारत छोड कर फ्रांस पहुंच गये, तत्पश्चात जर्मन युद्ध के मोर्चे पर पहुंचे तथा सत्यार्थ प्रकाश का पाठ नित्य किया करते थे वही इनका सम्पर्क पं रघुवर दयाल जी से हुआ, कलान्तर में पं रघुवर दयाल जी ने आर्य समाज का बड़ा कार्य किया।

संस्कार विधि– ये संस्कार विधि के अनुसार पूर्ण संस्कार करने लगे। यहां तक कि अपने माता पिता की अंत्येष्टि पूर्ण वैदिक धर्म रीति से करायी।

डोला पालकी आंदोलन– सन 1923 में डोला पालकी आंदोलन चलाया गया जो लगभग 20 वर्षों तक चलता रहा अन्त में जीत सत्य की ही हुई।

शिल्पकारो की समस्यायें– शिल्पकारों के साथ सवर्णो द्वारा भीषण अत्याचार तथा किसी भी प्रकार की उनको स्वतंत्रता नही थी, तथा वे कर्जे के तले पीढी दर पीढी दबे होते थे। मन्दिरों में पूजा करने नहीं जा सकते थे, जूता नहीं पहन सकते थे। शादी–व्याह में खुशियां नहीं मना सकते थे, अनेक पीडा थी। उनको लेकर भारतीय जी ने महात्मा गांधी, पं जवाहरलाल नेहरु, महामनामदन मोहन मालवीय एवं गोविन्द बल्लभ पन्त जैसे उच्च काठि के नेताओं से मिलकर गढवाल के हालात बताये।

तिरंगा–झण्डा फहराया– 28 अगस्त 1930 को राजकीय विद्यालय जहरीखाल की इमारत पर तिरंगा–झण्डा फहराया और 30 अगस्त 1930 में लैंसडाउन न्यायालय द्वारा तीन माह का कठोर कारावास हो गया 6 सितम्बर 1932 में उत्तर प्रदेश के अंग्रेज गवर्नर सर मैलकम हैली को पौडी आमंत्रित किया गया। भारतीय जी कारागर से मुक्त हो गये थे, किन्तु व्यस्तता के कारण किसी को ध्यान नही रहा गवर्नर के स्वागत की भारी तैयारी की गयी थी। सभा खचा–खच भरी हुई थी इतने में वीर जयानन्द भारतीय जी खडे हुए और तिरंगा झण्डा उठा कर मंच पर आ गये, और भारतमाता की जय तथा ''गो बैक मेलकमहेली'' अमन सभा मुर्दाबाद, कांग्रेस जिंदाबाद के नारे लगाये। गवर्नर डरकर बंगले से भाग गया, चारों ओर से पुलिस ने इन्हें घेर लिया और उनके ऊपर दरी डाल दी गयी और डन्डो से पीटने लगे। और जेल भेज दिये गये। भारतीय जी के जीवन का यह ऐतिहासिक काण्ड पौडी काण्ड जनपद मुख्यालय के गजट में सुरक्षित है।

सन 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने पर पकडे गये 22 अप्रेल 1943 को दो वर्ष का कठोर कारावास

दिया गया। जनता ने अप्रैल 1946 में दुगड्डा में अभूतपूर्व आर्य महा सम्मेलन किया। इस सम्मेलन में कई जनपदों के 57 आर्य विभिन्न क्षेत्रों से आये विभूतियों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त आर्य समाज क्वेटा, कराची, लाहौर, बम्बई, सहारनपुर, देहरादून के आर्यों ने भाग लिया था, अपने आप में यह सम्मेलन भविष्य के लिए मील का पत्थर बना।

भारतीय जी की देन– जयानन्द भारतीय एक महान समाज सुधारक एवं धार्मिक अन्धविश्वासों के खात्मा करने वाले थे, उन्होने वैदिक धर्म मार्ग जो ईश्वरीय मार्ग था उससे जन जागृती करते थे, सामाजिक क्षेत्र के परिपेक्ष्य में जातीय भेदभाव, ऊँच–नीच, अस्प्रश्यता तथा बाल विवाह एवं कन्या विक्रय का घोर विरोध किया।

भारतीय जी के समय गढवाल में लगभग 105 आर्य समाज उनके समय कार्यरत थी। उन्होने शुद्धीकरण का आन्दोलन चलाकर लाखों हिन्दुओं को विधर्मी होने से बचाया। उनके द्वारा डोला पालकी आन्दोलन 20 वर्षों तक चला।

भारतीय जी एक महामानव थे उनमे धर्म भक्ति, देश भक्ति, समाज समानवाद, व रुढी परम्पराओं को मिटाने व प्रत्येक अन्धविश्वास खत्म करने की अद्भुत क्षमता थी। भारतीय जी ने निर्भय होकर अंग्रेजी शासन की आलोचना की तथा राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए 6 बार जेल गये थे। डा0 भक्तदर्शन जी ने उनके विषय में लिखा था कि जयानन्द भारतीय जी गढवाल की महान विभूति थे।

जन सेवा में व्यस्त रहते हुए उन्होने स्वास्थ्य का ध्यान नही दिया और वह गम्भीर रूप से रोग ग्रस्त हो गये। दो माह तक देहरादून में चिकित्सा कराते हारे। इस अवधि मे प्रवासी बन्धुओ ने तन–मन–धन से उनकी सेवा करी। इन्होने अपने पैतृक स्थान अरकन्डाई जाने की इच्छा व्यक्त की। उनकी बीमारी का समाचार आग की तरह चारों ओर फैल गया, सभी उनके दर्शनों को आने लगे तथा 9 सितम्बर 1952 को अपराह्न 2 बजे अपनी पैतृक कुटिया में इस भौतिक देह को त्याग दिया, 71 वर्ष की आयु में यह गढवाल का गांधी गढवाल का दयानन्द, मुक्ति को प्राप्त कर गये।

श्रोताओं वीर जयानन्द भारतीय जी का मैने संक्षिप्त में परिचय मात्र दिया है उनके पूरे कार्यों का उल्लेख दो–तीन पृष्ठों में नही हो सकता है। वह एक बडी किताब बन जायेगी।

आज आवश्यकता है उनके सुधारवादी विचारों को घर–घर पहुँचाने की। इस युग में भी अनेक सामाजिक कुरीतियाँ चुनौती बनी हुई है। अन्त में मै उन सभी धर्म जाति के लिये बलिदानी वीरो को जैसे खुशीराम आर्य जी, मुंशी हरीप्रसाद टम्टा, ब्रह्मचारी बालक राम प्रज्ञाचक्षु, गिरधारी लाल आर्य, बाबू बोथा सिंह जी, गंगाराम आर्य, शान्ति प्रकाश प्रेम, लक्ष्मी देवी टम्टा, गंगा प्रसाद आर्य, भगतराम वैध, बनवारी लाल आर्य, लोकमणि आर्य, बहादुरराम आर्य, दुर्गा लाल भिक्षु, ठाकुर पंचम सिंह(पंचमुनि), पं रघुवरदयाल मुनि, ठाकुर केसर सिंह आदि अनेक महापुरूषों को इस अवसर पर हम श्रद्धाजंली अर्पित करते है।

हमारा जीवन यज्ञमय होना चाहिये : श्री योगेश मुंजाल जी

—मनमोहन कुमार आर्य

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून का 5 दिवसीय ग्रीष्मोत्सव 15 मई को आरम्भ होकर दिनांक 19 मई 2019 को सोल्लास सम्पन्न हुआ। आश्रम की नवनिर्मित भव्य एवं विशाल यज्ञशाला में प्रतिदिन प्रातः व सायं वेद पारायण यज्ञ होता रहा तथा रविवार को यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी थे। मुख्य वक्ता आगरा के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान श्री उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ तथा मुख्य भजनोपदेशक आर्यजगत के प्रसिद्ध गीतकार एवं गायक पं0 सत्यपाल पथिक जी थे। मन्त्रपाठ गुरुकुल पौंधा देहरादून के ब्रह्मचारियों ने किया। यज्ञ का संचालन श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी जी, वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर ने किया। पं0 सूरत राम शर्मा आश्रम के धर्माधिकारी हैं। वह भी यज्ञ में उपस्थित रहते थे। रविवार 19 मई को यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। इसके बाद का कार्यक्रम आश्रम

के भव्य सभागार में सम्पन्न हुआ। आज यहां स्वामी दीक्षानन्द स्मृति समारोह का आयोजन हुआ। आयोजन में दिल्ली से केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के अध्यक्ष डॉ0 अनिल आर्य, श्रीमती प्रवीण आर्या तथा परिषद की पूरी टीम पधारी हुई थी। कार्यक्रम का संचालन विदुषी बहिन सुनीता बुद्धिराजा जी ने बहुत कुशलता से किया।

विदुषी बहिन सुनीता बुद्धिराजा जी ने

कहा कि यज्ञ करने का सौभाग्य तभी मिलता है जब ईश्वर की हम पर कृपा होती है। आज के आयोजन की अध्यक्षता देश के प्रसिद्ध उद्योगपति एवं ऋषि भक्त श्री योगेश मुंजाल जी ने की। श्री मुंजाल जी को शाल एवं एक चित्र भेंट कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अन्त में उनका सम्बोधन हुआ। हम उनका सम्बोधन यहां पहले प्रस्तुत कर रहे हैं। श्री योगेश मुंजाल जी ने कहा कि मैं यहां आश्रम में आश्रम के प्रधान श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी की प्रेरणा से आया हूं। मैं कई वर्षों बाद यहां आ सका हूं। यहां मैंने अनेक सुखद परिवर्तन देखें हैं। सभागार एवं दो भव्य यज्ञशालाओं को देखकर मुझे अतीव प्रसन्नता हुई है। पहले यहां टीन की छत का बना हुआ सभागार था जबकि अब यहां एक आधुनिक एवं भव्य सभागार है। यज्ञशाला भी पुरानी थी जो इसी वर्ष निर्मित हुई है तथा इसकी भव्यता देखते ही बनती है। उन्होंने कहा कि आश्रम अब काफी अच्छा बन गया है। श्री योगश मुंजाल जी ने आश्रम के मंत्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी को बधाई दी। उन्होंने कहा कि आश्रम के मंत्री जी ने यहां अच्छा काम किया है। मैं आशा करता हूँ कि आपका सहयोग इनको सदैव प्राप्त होता रहेगा।

श्री योगेश मुंजाल जी ने कहा कि मुझे स्वामी दीक्षानन्द जी की काफी यादें आ रही हैं। जब मैं छोटा था तो स्वामी जी लुधियाना के हमारे निवास पर आते रहते थे। वह हमारे उद्योग के सभी कर्मचारियों को प्रवचन दिया करते थे। जब हम दिल्ली आ गये, तो दिल्ली में भी स्वामी जी हमारे निवास पर आते और हमें प्रवचन दिया करते थे। हमें उनके जीवन में तथा अन्तिम दिनों में भी उनकी सेवा करने का अवसर मिला। स्वामी जी अपने प्रवचन में हमें छोटी छोटी बातें बताते थे। आज तक हमें उनकी वह सब बातें याद हैं। वह बताते थे कि हमारा जीवन यज्ञमय होना चाहिये। उनके अनुसार दूसरों को नमस्ते करना तथा झुकना वा सम्मान देना भी एक यज्ञ है। किसी को प्यार से मीठे वचन बोलना भी यज्ञ है। सद्व्यवहार करना भी एक यज्ञ है। परिवार में सभी सदस्य एक दूसरे का आदर करें और अच्छा व्यवहार करें, यह भी एक यज्ञ होता है।

उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति सुख चाहता है। हम सुख प्राप्ति के लिये कोशिश बहुत कम करते हैं। **यदि हमारे मन में शान्ति नहीं है तो हम सफल व्यक्ति नहीं हैं। धन का महत्व तभी है जब मन में शान्ति हो।** मैंने अनुभव किया है कि हमें ठीक से रहना व बोलना नही आता। एक उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि नौयडा में एक व्यक्ति अपनी एक पुस्तक बेच कर रहा था। वह लोगों से तीन प्रश्न कर रहा था। 1– क्या आप खुश रहना चाहते हैं? सौ प्रतिशत लोग बता रहे थे कि वह खुश रहना चाहते हैं। दूसरा प्रश्न था कि क्या आप खुश हैं? अस्सी प्रतिशत लोगों का उत्तर नहीं था और लगभग बीस प्रतिशत लोगों का उत्तर हां में था। उस व्यक्ति का तीसरा प्रश्न था कि **आप लोग खुश क्यों नहीं हैं?** इसका कारण लोगों ने बताया कि दूसरों के व्यवहार के कारण वह दुःखी रहते हैं। श्री मुंजाल ने कहा कि घर में माता, पिता, भाई, बहिन, पत्नि, स्कूल अध्यापक, कार्यालय में साथी कर्मचारी आदि का व्यवहार अनुकूल नहीं होता है। **श्री मुंजाल ने कहा कि किसी भी व्यक्ति ने अपने व्यवहार को अपने दुःख का कारण नहीं बताया।**

ऋषिभक्त विद्वान एवं प्रसिद्ध उद्योगपति श्री योगेश मुंजाल जी ने कहा कि आपने अपनी खुशी का रिमोट दूसरों के हाथों में दे रखा है। यही आपके दुःखों का कारण है। उन्होंने कहा कि अपना रिमोट अपने पास रखिये। हम अपने को सुधारेंगे तो हमारे अच्छे दिन आ जायेंगे। मन की शान्ति जीवन में सबसे महत्वपूर्ण है। उन्होंने श्रोताओं को अपने मन की शान्ति को बनायें रखने तथा उसे किसी बाह्य कारण से प्रभावित न होने देने के लिये आवश्यक प्रयत्न करने को कहा। उन्होने आयोजन में उपदेशक, भजन गायक, सम्मानित सभी व्यक्तियों सहित आश्रम में दूर दूर से पधारे सभी बन्धुओं को धन्यवाद दिया और सबको बधाई भी दी। इसी के साथ उन्होंने अपने सम्बोधन को विराम दिया।

समारोह का आरम्भ तपोवन विद्या निकेतन जूनियर हाईस्कूल, देहरादून की छात्राओं ने स्वागतम् गीत प्रस्तुत कर किया। इसके बाद विद्यालय की कुछ छात्राओं ने एक गढ़वाली लोकगीत उत्सवी वेशभूषा में नृत्य व गायन के माध्यम से प्रस्तुत किया जिसे श्रोताओं ने मुक्त कण्ठ से सराहा। द्रोणस्थली कन्या गुरुकुल, देहरादून की आचार्या डॉ0 अन्नपूर्णा जी अपनी कुछ छात्राओं के साथ आश्रम के उत्सव में पधारी हुई थीं। उनकी छात्राओं ने भी संस्कृत भाषा का एक गीत गायन के माध्यम से प्रस्तुत किया जिसमें 'श्रद्धा' से सम्बन्धी शास्त्रीय विचारों व मान्यताओं को प्रस्तुत किया गया था।

आर्यसमाज की विदुषी आचार्या डॉ० अन्नपूर्णा जी ने अपने सम्बोधन के आरम्भ में कहा कि **जो सत्संग की गंगा में स्नान कर लेता है उसका जीवन धन्य हो जाता है।** मनुष्य के सत्संग में जाने और वहां वेदों की मान्यताओं एवं सिद्धान्तों पर प्रवचन सुनकर तथा उसके अनुसार जीवन बनाकर भविष्य में पाप कर्मों को करने से बच सकता है। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में वेद ज्ञान के प्रचार व प्रसार की बहुत आवश्यकता है। **डॉ० अन्नपूर्णा जी ने यह भी कहा कि मनुष्य वेद ज्ञान को प्राप्त कर उसे धारण किये बिना संसार में भटकता रहता है।** आचार्या जी ने बताया कि वेद में कहा गया है कि सारा संसार ईश्वर की स्तुति करता है। उन्होंने कहा कि मनुष्य को मनुष्य बनने के लिये सद्ज्ञान की आवश्यकता है। उन्होंने यह भी कहा कि हमारा जीवन यज्ञमय बने, यह जीवन का सार है। डॉ० अन्नपूर्णा जी ने कहा कि हमें अपने महापुरुषों श्री राम, श्री कृष्ण एवं महर्षि दयानन्द आदि को याद करना चाहिये एवं ऋषि के ग्रन्थों सत्यार्थप्रकाश, दर्शन एवं उपनिषद् आदि का अध्ययन करना चाहिये। उन्होंने यह भी कहा कि हमें वेदों को अपने जीवन में उतारना है।

आर्य भजनोपदेशिका श्रीमती मिथिलेश आर्या जी ने एक भजन प्रस्तुत किया जिसे लोगों ने भी उनके स्वरों के साथ मिलकर गाया। भजन के बोल थे **'अखण्ड ब्रह्मचारी ऋषि दयानन्द, इस दुनिया में आया कोई माने या न माने, ऋषि ने शिव को पाया।'** इस भजन के बाद उन्होंने एक अन्य भजन **'हम हैं तुम्हारे प्रभु तुम हो हमारे, अन्तःकरण में हम तुम को निहारे'** की भी एक पंक्ति गा कर सुनाई। बहिन जी की आवाज में मधुरता है। इस कारण यह दोनों भजन श्रोताओं को अच्छे लगे। आश्रम के मंत्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि वैदिक साधन

आश्रम तपोवन की स्थापना सन् 1949–50 में अमृतसर निवासी बावा गुरमुख सिंह जी ने आर्यसमाज के विद्वान नेता और संन्यासी महात्मा आनन्द स्वामी जी की प्रेरणा से की थी। उन्होंने कहा कि हमारा यह आश्रम देश में योग प्रशिक्षण का एक मुख्य केन्द्र है। शर्मा जी ने कहा कि अतीत में यहां अनेक प्रसिद्ध योगियों ने तप एवं साधना की है। मंत्री श्री शर्मा जी ने कहा कि आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध विद्वान आचार्य आशीष दर्शनाचार्य जी यहां निवास करते हैं और वर्ष भर यहां युवक व युवतियों के चरित्र निर्माण, स्किल डवलपमेन्ट तथा योग प्रशिक्षण आदि के शिविर लगाते रहते हैं। उन्होंने कहा कि यहां आयोजित सभी शिविर निःशुल्क होते हैं जिसमें आसपास के राज्यों के लोग भी भाग लेते हैं। मंत्री जी ने श्रोताओं को यह भी बताया कि आश्रम तपोवन विद्या निकेतन जूनियर हाईस्कूल के नाम से 400 बच्चों के एक स्कूल का भी संचालन करता है जिसमें निकटवर्ती निर्धन बच्चे अध्ययन करते हैं। बच्चे प्रतिभाशाली हैं जिनका परीक्षा परिणाम बहुत अच्छा रहता है। बच्चों को धर्म व नैतिक शिक्षा का अध्ययन कराया जाता है और सप्ताह में दो बार आश्रम के धर्माधिकारी पं0 सूरत राम शर्मा विद्यालय में यज्ञ कराते हैं जिसमें बच्चे एवं विद्यालय की अध्यापिकायें भाग लेती हैं। आश्रम ने एक वृहद चिकित्सालय का निर्माण भी सम्पन्न कराया गया है जो अब नियमित रूप से संचालित किया जायेगा। शर्मा जी ने कहा कि आश्रम की अपनी एक गोशाला भी हैं जहां 12 गायें हैं। श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी ने आश्रम की अनेक अन्य गतिविधियों की भी जानकारी श्रोताओं को दी। उन्होंने कहा कि आश्रम से 3 किमी0 दूर पहाड़ियों व वनों में स्थित आश्रम की दूसरी इकाई में एक भव्य यज्ञशाला का निर्माण कराया है जहां समय समय पर वेद पारायण यज्ञ होते रहते हैं। आश्रम ने अपने मुख्य आश्रम की यज्ञशाला का भी पुनर्निर्माण, नवीनीकरण एवं विस्तार बहुत ही कम समय में किया है। शर्मा जी ने कहा कि आश्रम के साधन सीमित हैं तथापि दृढ़ इच्छा शक्ति से यह सभी कार्य सम्पन्न किये गये हैं। उन्होंने बताया कि आश्रम के प्रधान श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी की इच्छा थी कि आश्रम की यज्ञशाला को भव्य रूप देने के साथ इसका विस्तार किया जाये जिससे यहां भी अनेक कुण्डीय यज्ञ एवं सत्संग आदि बरसात के मौसम में भी निर्विघ्न सम्पन्न कराये जा सके। आश्रम के मंत्री श्री शर्मा जी ने आर्य जनता से आर्थिक सहयोग की अपील की। यज्ञशाला के निर्माण में श्री फारुख अंसारी जी ने बहुत सहयोग दिया। तीन श्रमिक महिलाओं ने बिना अतिरिक्त धन लिये रात्रि को 10.00 बजे तक कार्य करके बहुत ही कम समय में यज्ञशाला को भव्य रूप में निर्मित किया। इन श्रमिकों व श्री फारुख अंसारी जी को आश्रम के अधिकारियों ने मंच पर बुलाकर विधिवत् रूप में सम्मानित किया।

आश्रम के प्रधान श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी पिछले कई दिनों से दिल्ली के एक अस्पताल में आईसीयू में चिकित्साधीन रहे। उनका वीडियो पर रिकार्ड मैसेज श्रोताओं को सुनाया गया। मैसेज में प्रधान जी ने प्रथम परमात्मा को धन्यवाद किया। उन्होंने उत्सव में पधारे सभी अतिथियों को नमस्ते कहा। प्रधान जी ने आश्रम पधारने के लिये श्री योगेश मुंजाल जी का धन्यवाद किया। स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी का भी प्रधान जी ने धन्यवाद

किया। कुछ प्रमुख लोगों का नाम लेकर प्रधान जी ने सभी अतिथियों वा श्रोताओं को भी आश्रम के उत्सव में पधारने के लिये धन्यवाद दिया। श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी के पौत्र, दौहित्र एवं भांजी सुश्री सुनीता बुद्धिराजा भी आश्रम के उत्सव में उपस्थित हुईं। उनका आश्रम की ओर से ओ३म् के पटके पहनाकर सम्मानित किया गया। श्रीमती प्रवीण आर्या जी को भी ओ३म् के पटके के द्वारा सम्मानित किया गया।

सुश्री सुनीता बुद्धिराजा जी ने अपने सम्बोधन में वेदमंत्र **'इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चितिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे'** की चर्चा की। उन्होंने कहा कि हम इस मंत्र से यज्ञ में आहुति देते हैं। बहिन जी के अनुसार स्वामी दीक्षानन्द जी इस मंत्र की बहुत सुन्दर व्याख्या किया करते थे। इस मन्त्र में कहा गया है कि इन्द्र परमेश्वर हमें श्रेष्ठ धन की प्राप्ति कराये। उन्होंने पूछा कि धन कैसा हो? उन्होंने बताया कि धन ऐसा होना चाहिये कि जो हमारे चित्त, मन, बुद्धि व आत्मा को पवित्र व दक्ष करे। बहिन जी ने कहा कि धन से अहंकार उत्पन्न होता है। प्रभु से हम प्रार्थना करते हैं कि वह हमें ऐसा धन दे जिससे हमारा मन व मस्तिष्क नियंत्रण में रहे। उन्होंने कहा कि हमारा धन रोगियों के कष्टों को दूर करने वाला होना चाहिये। अहंकार से हम सदा दूर रहें। इसके बाद आयोजन में उपस्थित श्रीमती राज सरदाना जी ने एक कविता प्रस्तुत की।

इसी बीच अग्निहोत्र धर्मार्थ न्यास, दिल्ली की ओर से कुछ विद्वानों का सम्मान किया गया। पहला सम्मान स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी का किया गया। सुश्री सुनीति जी ने स्वामी जी का परिचय देने के साथ उनके कार्यों की प्रशंसा की। स्वामी जी को **'यज्ञरत्न'** की उपाधि से सम्मानित किया गया। स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक जी, रोजड को **'वेदरत्न'** सम्मान से सम्मानित किया गया। स्वामी विवेकानन्द जी आयोजन में उपस्थित नहीं हो सके। अतः यह सम्मान उनके शिष्य ब्र0 प्रियेश जी को दिया गया। तीसरा आर्य विदुषी सम्मान आर्य विद्वान पं० रामप्रसाद वेदालकार जी की धर्मपत्नी श्रीमती सरोज जी को प्रदान किया गया। इसके बाद ऋषिभक्त राष्ट्र–कवि सारस्वत मोहन मनीषी जी का अग्निहोत्र धर्मार्थ न्यास की ओर से शाल, स्मृति चिन्ह तथा नगद धनराशि आदि से सम्मान किया गया। आयोजन में उपस्थित श्री रामभज मदान, श्री विनीत आहूजा, श्री विजय गोयल जी तथा श्री वेद मंगलानी जी का भी सम्मान किया गया।

इसी क्रम में राष्ट्र कवि श्री सारस्वत मोहन मनीषी जी ने अपनी एक लोकप्रिय कविता गाकर प्रस्तुत की। कविता के बोल थेः

हंसना भी जरुरी है रोना भी जरुरी है। जगना भी जरुरी है सोना भी जरुरी है।।

पाना भी जरुरी है खोना भी जरुरी है। खेतों में बन्दूकें बोना भी जरुरी है।।

सम्मान जरुरी है अपमान जरुरी है। अभिशाप जरुरी है वरदान जरुरी है।।

आजादी गाती है बलिदान जरुरी है। चाहो जो अमर होना विषपान जरुरी है।।

हम बल बन जायेंगे बलवान तीरंगे का। छीनने न कभी देंगे वरदान तीरंगे का।।

हम खूब जानते हैं सम्मान तीरंगे का। होने न कभी देंगे अपमान तीरंगे का।।

नवरुपी सागर का जलयान तीरंगा है। सांसों की धड़कन का जय गान तीरंगा है।।

धरती से अम्बर तक उत्थान तीरंगा है। हर भारतवासी का भगवान तीरंगा है।।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के प्रधान श्री गोविन्द सिंह भण्डारी जी ने भी सत्संग सभा को सम्बोधित किया। उन्होंने आश्रम के कार्यों की भूरि भूरि प्रशंसा की। विद्वान वक्ता ने सामाजिक बुराईयों की चर्चा की और आर्यसमाज को उसके विरुद्ध आन्दोलन करने की आवश्यकता बताई। **इसके बाद अग्निहोत्री धर्मार्थ न्यास की ओर से वैदिक साधन आश्रम तपोवन के मंत्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी का भी शाल आदि भेंट कर सम्मान किया गया।** शर्मा जी के बाद पं0 सत्यपाल पथिक जी का भजन हुआ। उन्होंने **''ओ दाता श्रेष्ठ धन देना''** भजन प्रस्तुत किया। **इस भजन के बाद आर्य विद्वान श्री उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ, आगरा जी का सम्मान किया गया।** स्वामी दीक्षानन्द जी के दो भांजे श्री राकेश भटनागर आदि आयोजन में उपस्थित थे। उनका भी अभिनन्दन किया गया।

अध्यक्षीय भाषण से पूर्व केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ0 अनिल आर्य जी का सम्बोधन हुआ। डॉ0 अनिल जी ने देश भक्ति व धर्म संबंधी प्रेरक कविताओं के कुछ पद्यों को वीर रस में गाकर प्रस्तुत किया। **उन्होंने कहा कि देश में कोई भी क्रान्ति बिना युवाओं के नहीं आ सकती।** डॉ0 अनिल जी ने देश की परतन्त्रता और देश की आजादी में आर्यसमाज के योगदान की चर्चा भी की। विद्वान वक्ता ने देश के हिन्दुओं व आर्यो के समक्ष विद्यमान संकटों की चर्चा की। उन्होंने देश में अशान्ति एवं भावी खतरों से श्रोताओं को अवगत कराया। **उन्होंने कहा कि जब तक हिन्दू संगठित नहीं होगा देश का भविष्य सुरक्षित नहीं हो सकता।** डॉ० अनिल आर्य ने कहा कि हिन्दुओं को उन्हें अपमानित किये जाने वाली घटनाओं पर प्रतिक्रिया देनी चाहिये जैसे अन्य मतों के लोग देते हैं। **डॉ० अनिल आर्य जी ने उत्सव में आये सभी आर्य बन्धुओं को यह संकल्प लेने के लिये कहा कि वह वैदिक धर्म और आर्यसमाज को एक जुझारु संगठन बनायेंगे।** उन्होंने कहा कि हिन्दू समाज को ओ३म् पताका के नीचे संगठित होना चाहिये। डॉ0 अनिल आर्य जी ने केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के आगामी युवक व युवतियों के शिविरों की जानकारी भी दी। आर्य जी ने कहा कि परिषद देश के अनेक भागों में युवक व युवतियों के शिविरों का आयोजन करा रही है। उन्होंने स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी विषयक अपने अनेक संस्मरण भी सुनाये। अपने वक्तव्य को विराम देते हुए उन्होंने भारत माता की जय, वन्देमातरम्, वैदिक धर्म की जय आदि के नारे भी लगवाये। डॉ० अनिल आर्य जी का वक्तव्य बहुत प्रभावशाली था जिसमें देश में हिन्दुओं के लिए उपस्थित गम्भीर संकटों की चर्चा होने के साथ उसके समाधान पर भी विचार दिया गया।

आश्रम का पांच दिवसीय ग्रीष्मोत्सव इसी के साथ सम्पन्न हो गया। इसके पूर्व के चार दिनों में आश्रम में यज्ञ, भजन एवं अनेक सम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पादित हुए।

श्रद्धांजलि

आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध सन्यासी स्वामी दिव्यानन्द नहीं रहे

—मनमोहन कुमार आर्य

आर्यसमाज के उच्च कोटि के विद्वान एवं नेता स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी, योगधाम, ज्वालापुर–हरिद्वार अब नहीं रहे। दिनांक 28 मई, 2019 प्रातः 9.00 बजे उनका देहावसान हो गया। यह जानकारी हमें वैदिक साधन आश्रम, तपोवन–देहरादून के मंत्री श्री प्रेमप्रकाश शर्मा जी से दूरभाष पर प्राप्त हुई। उन्होंने बताया कि उनकी अन्त्येष्टि दिनांक 29–5–2019 को हरिद्वार के कनखल स्थित श्मशान घाट पर की जायेगी। स्वामी दिव्यानन्द जी विगत काफी समय से रुग्ण चल रहे थे और उनका शरीर काफी कमजोर हो गया था। स्वामी जी वैदिक साधन आश्रम तपोवन के संरक्षक थे। वह कई दशकों से यहां प्रत्येक उत्सव में आते थे। यहां यज्ञों के ब्रह्मा बनते थे और यहां सभी उत्सवों पर आयोजित होने वाले वेद पारायण यज्ञों में याज्ञिकों को अपना आशीर्वाद देने सहित वेदोपदेश भी करते थे। हमने अपने जीवन में योगधाम सहित अनेक स्थानों पर स्वामी दिव्यानन्द जी के उपदेशों को सुना है और उनसे वार्तालाप करने सहित उनका साक्षात्कार लेकर उसे लेख के माध्यम से प्रस्तुत भी किया है। उनके दिवंगत होने से वैदिक धर्म का एक प्रभावशाली विद्वान प्रचारक और ऋषि भक्त कम हो गया है। अब हम उनके आशीर्वाद, प्रेरणादायक वचनों एवं प्रवचनों से वंचित हो गये हैं। ईश्वर से प्रार्थना है कि ईश्वर स्वामी दिव्यानन्द जी की पुण्य आत्मा को सद्गति एवं शान्ति प्रदान करे। उनकी अनुपस्थिति में

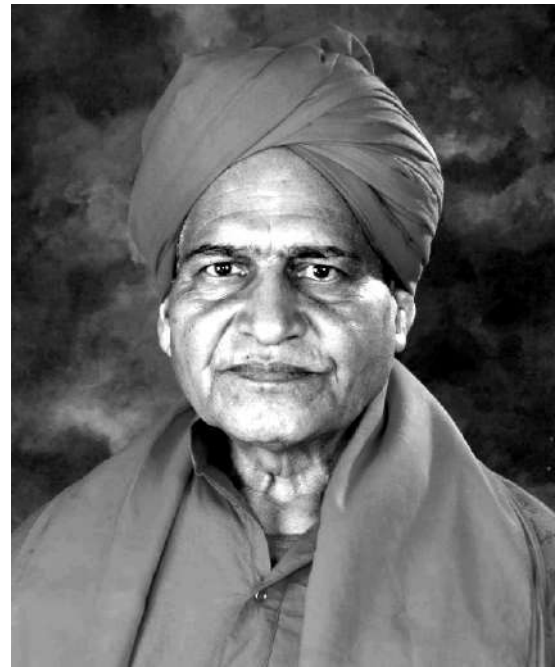

योगधाम का कार्य पूर्ववत् चलता रहे, यह हमारी कामना है।

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी का जन्म उत्तर प्रदेश राज्य के मैनपुरी जनपद के ग्राम देवनगर में 12 अप्रैल, सन् 1939 को हुआ था। स्वामी जी को कुल 80 वर्षों की आयु प्राप्त हुई। संन्यास से पूर्व उनका नाम योगेन्द्र पुरुषार्थी था। आपने क्षेत्रीय इन्टर कालेज सिरसागंज से कक्षा 12 की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। इसके बाद बाद आपने हरियाणा राज्य के प्रसिद्ध गुरुकुल– झज्जर में शिक्षा प्राप्त की। यहां गुरुकुल में रहकर आपने व्याकरणाचार्य, दर्शनाचार्य एवं वेदाचार्य आदि उपाधियां प्राप्त

कीं। आपने हरिद्वार के गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से वैदिक साहित्य विषय लेकर एम0ए0 किया था। आपने दर्शन शास्त्र में भी एम0ए0 किया था। वेदों में योग विद्या विषय में आपने पी0एच–डी0 तथा डी0लिट0 की उपाधि प्राप्त की थी। स्वामी दिव्यानन्द जी ने डी0लिट0 की थीसिस वैदिक साधन आश्रम तपोवन के सुरम्य और शान्त वातावरण में रहकर ही पूर्ण की थी। प्रसिद्ध आर्य विद्वान एवं बाल रोग विशेषज्ञ डॉ0 विवेक आर्य, दिल्ली ने बताया है कि उन्होंने स्वामी जी के शोध प्रबन्ध वा ग्रन्थ को पढ़ा है। प्रसिद्ध आर्य विद्वान श्री भावेश मिरजा, भरुच ने भी स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी को श्रद्धाजंलि अर्पित की है। स्वामी पातजंल योगधाम ज्वालापुर– हरिद्वार के अध्यक्ष थे। इसके अतिरिक्त आप महर्षि दयानन्द योगधाम, फरीदाबाद तथा विरक्त मंडल, हरिद्वार के भी अध्यक्ष थे। देहरादून के वैदिक साधन आश्रम तपोवन के आप संरक्षक पद पर थे। स्वामी जी ने वेद प्रचारार्थ मारीशस एवं कुछ अन्य देशों की यात्रायें भी की थीं।

स्वामी दिव्यानन्द जी योग के प्रचार व प्रसार के लिए सर्वात्मा समर्पित थे। हम उनके अनेक शिष्यों से परिचित हैं। इनमें हरयाणा निवासी एक श्री अमर मुनि जी भी हैं। वह आयुवृद्ध वानप्रस्थी योगसाधक हैं और इन्होंने योग एवं उपासना के क्षेत्र में अनेक उपलब्धियां प्राप्त की हैं। हमने एक बार तपोवन आश्रम में इनका साक्षात्कार भी किया था और इसकी एक वीडियो भी तैयार की थी। इस अवसर पर इन्होंने हमें योग की अपनी कुछ उपलब्धियों के बारे में कुछ विस्तार से बताया था। श्री अमर मुनि जी विगत कुछ वर्षों से वैदिक साधन आश्रम के उत्सव में नहीं आ पा रहे हैं। इसका कारण उनके स्वास्थय का अनुकूल न होना हो सकता है। हमारे एक निकट मित्र श्री ललित मोहन पाण्डे जी ने भी ज्वालापुर में योगधाम में रहकर स्वामी दिव्यानन्द जी से योगाभ्यास व योग साधना का प्रशिक्षण लिया है। आपने योग दर्शन को भी हृदयगंम किया है। जब भी योग व ध्यान आदि की चर्चा आती है तो आप योग के सूत्र व उनकी व्याख्या कर हमारा मार्ग दर्शन करते हैं। स्वामी जी के रोग की स्थिति में ही एक वर्ष पूर्व हमने श्री ललित मोहन पाण्डे जी की उपस्थिति में स्वामी दिव्यानन्द जी का साक्षात्कार लिया था। इस वार्तालाप में यह बात सामने आयी थी कि स्वामी जी ने अपने जीवन में बहुत कठोर परिश्रम वा तप किया है तथा वह शरीर को विश्राम बहुत कम देते थे। वार्ता में यह भी बताया गया था कि स्वामी जी दिन व रात की यात्रा कर कार्यक्रमों पर पहुंचते थे और बिना विश्राम किये ही मंच पर जा कर अपना व्याख्यान व प्रशिक्षण आरम्भ कर दिया करते थे। स्वामी जी ने भी स्वास्थ्य बिगड़ने के पीछे इस बात को सही माना था। अब स्वामी जी नहीं हैं। उनकी स्मृतियां ही हमारे सम्मुख हैं। हमें उनकी शिक्षाओं का पालन करना है। उनके साहित्य का अध्ययन कर उससे लाभ उठाना है और इसके साथ ही अपने जीवन में स्वास्थ्य के नियमों का पालन भी करना है।

एक बार पुनः हम स्वामी दिव्यानन्द जी पावन स्मृति को नमन करते हैं और उन्हें पवमान परिवार की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। ईश्वर उनकी आत्मा को सद्गति वा शान्ति प्रदान करें।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन को दान देने वाले दानदाताओं की सूची दिनांक 15 मई 2019 से 17 मई 2019 तक

क्र.स.	नाम	धनराशि
1.	श्री नीरज भाटिया, नई दिल्ली	2200
2.	श्री दिनेश पंवार जी, रूड़की	3100
3.	श्रीमती निर्मल मदान जी, नई दिल्ली	6000
4.	श्री ए0 सी0 शर्मा, देहरादून	2100
5.	श्री राजीव कुमार, देहरादून	2100
6.	श्री सुभम अग्रवाल, लुधियाना	10000
7.	राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा, उ0ख0	2100
8.	श्रीमती किरन सेठी, नई दिल्ली	2100
9.	श्री जी0पी0 भल्ला, दिल्ली	5000
10.	श्री अनंत शरण जिंदल, दिल्ली	2500
11.	श्री सत्यशरण गुप्ता, जालंधर	2500
12.	माता नरेन्द्र बब्बर, तपोवन	5100
13.	श्री यश वर्मा, यमुनानगर	5000
14.	माता धवन जी, तपोवन	2100
15.	श्रीमती शान्ति देवी सैनी, हरिद्वार	1000
16.	श्री हरबंस जी एवं राज रानी जी, हरियाणा	5100
17.	श्री अशोक कुमार वर्मा, देहरादून	11000
18.	श्रीमती सुषमा सचदेवा, देहरादून	8100
19.	श्रीमती सुप्रिया घई, देहरादून	8100
20.	निधि माथुर जी, उ0 प्र0	8100
21.	श्री ज्ञानचन्द्र गुप्ता, देहरादून	2100
22.	श्री प्रभुदयाल सचदेवा, दिल्ली	5100
23.	श्री राजकुमार भण्डारी, देहरादून	2500
24.	श्रीमती एस0 चड्ढा, दिल्ली	10000
25.	श्रीमती एस0 चड्ढा, दिल्ली	40000
26.	श्री धीरेन्द्र मोहन सचदेवा, देहरादून	2100
27.	माता लीलावती जी, तपोवन	1100
28.	श्री सोमपाल यादव, यू0पी0	1000
29.	श्रीमती सत्या सचदेवा, पंजाब	1100
30.	श्री इन्द्रजीत एवं प्रेमलता आर्य, हरियाणा	3100
31.	श्री जगदीश चन्द्र, गाजियाबाद	5000
32.	श्री ज्ञानचन्द्र अरोड़ा जी, तपोवन	11100
33.	श्रीमती सरोज यत्ती, मुरादाबाद	1100
34.	श्री एन0एस0 एवं राजबाला आहलूवालिया, देहरादून	5100
35.	डा0 सत्यपाल शर्मा, नौएडा	2100
36.	श्री छक्कन लाल एवं सत्यवंती जी, हरिद्वार	2100
37.	श्रीमती ईश्वर देवी, देहरादून	2100
38.	श्री केवल सिंह आर्य, पानीपत	1100
39.	मास्टर भागेराम एवं अंगूरी देवी जी, पानीपत	1100
40.	श्री धर्मवीर तलवार, देहरादून	2100
41.	श्री केसर सिंह जी, तपोवन	2100
42.	श्री मनोज सुगन्धा, जयपुर	1100
43.	श्री सुधीर संकित, जयपुर	1100
44.	स्त्री आर्य समाज दालबाजार, लुधियाना	3100
45.	श्री सुरेन्द्र के0 छिब्बर, देहरादून	10000
46.	श्री पूरनचन्द्र एवं शारदा आर्य, यू0पी0	3100
47.	श्रीमती शकुन्तला कालरा, दिल्ली	1100
48.	श्रीमती सविता नारंग, दिल्ली	1100
49.	श्री राजपाल जी, हरियाणा	1100
50.	स्व0 एस0एस0 कटारिया द्वारा प्रीती कटारिया, जयपुर	4100

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून सभी दानदाताओं का धन्यवाद करता है।

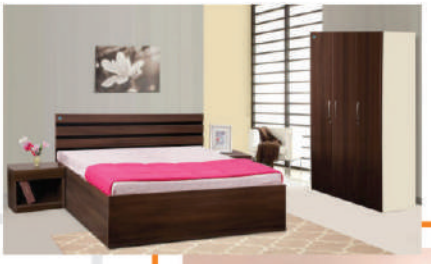

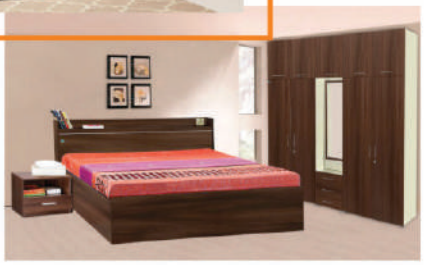

freedom to work...

Delite Kom Limited

All dimensions are subject to change without any prior notice because of continuous research & development. All designs shown here are proprietary: Any infringement is liable for prosecution.

DELITE KOM LIMITED

Kukreja House, IInd Floor, 46, Rani Jhanshi Road, New Delhi-110055
Ph. : 011-46287777, 23530288, 23530290, 23611811 **Fax :** 23620502 **Email :** delite@delitekom.com

ISO 9001 DNV CERTIFIED

डाक पंजीयन UA/DO/DDN/75/2018-2020 समाचार पत्र पंजीयन 51900/88

With Best Compliments From

MUNJAL SHOWA

हाई क्वालिटी शॉकर्स

TPM Certified

ISO / TS - 16949 - 2002 Certified

ISO - 14001 Certified

OHSAS - 18001 Certified

हमारे उत्पाद

* स्ट्रट्स/गैस स्ट्रट्स
* शॉक एब्जॉर्बर्स
* फन्ट फोर्कस
* गैस स्प्रिंगस/विन्डो बैलेन्सर्स

मुंजाल शोवा लिमिटेड भारत की प्रमुख शॉक एब्जॉर्बर्स बनाने वाली कंपनी है जिसकी रेंज फ्रन्ट फोर्कस, स्ट्रट्स (गैस चार्जड और कन्वेन्शनल) और गैस स्प्रिंगस की टू व्हीलर/फोर व्हीलर उद्योगों को उपलब्ध कराती है। कंपनी गुणवत्ता और सुरक्षा के उच्चतम मानकों के अनुरूप अपने सभी उत्पादों का निर्माण करती है। कंपनी के उत्पाद आरामदायक और सुरक्षित सवारी देते हैं और ये टिकाऊ और विश्वसनीय भी हैं। मुंजाल शोवा लिमिटेड, QS 9000, TS–16949, ISO 14001, OHSAS 18001 और TPM प्रमाणित कंपनी है। मुंजाल शोवा के तीन मैन्युफैक्चरिंग प्लॉट हैं – गुड़गॉव, मानेसर (हरियाणा) और हरिद्वार (उत्तराखण्ड)। मुंजाल शोवा लिमिटेड का शोवा कार्पोरेशन जापान के साथ तकनीकी और वित्तीय सहयोग करार है।

हमारे ख्यातिप्राप्त ग्राहक

Hero HONDA HONDA MARUTI SUZUKI YAMAHA

मुंजाल शोवा लिमिटेड

प्लॉट नं. 9–11, मारुति इंडस्ट्रियल एरिया
गुड़गॉव–122015, हरियाणा
दूरभाष :
0124–2341001, 4783000, 4783100
ईमेल : msladmin@munjalshowa.net
वेबसाइट : www.munjalshowa.net

MUNJAL SHOWA

वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रेम प्रकाश द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड) से मुद्रित एवं वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी (रजि.), नालापानी, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित। संपादक– कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री

सरस्वती प्रेस, देहरादून, ई-मेल : akhilg333@gmail.com